Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا (सूरत अन्निसा आयत :30)

अनुवाद: हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अपने माल नाजायज़ तरीक़ा से न खाया करो। हां यदि वह ऐसा व्यापार हो जो आपसी सहमति से हो और तुम अपने आप को कत्ल न करो। नि:सन्देह अल्लाह तुम पर बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक बदर क़ादियान

Weekly BADAR Qadian HINDI

वर्ष 5

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

अंक- 45

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फरीद

18 रबीयुल अव्वल 1441 हिजरी कमरी 5 नबुव्वत 1399 हिजरी शमसी 5 नवम्बर 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

मुझे कई बार आश्चर्य होता है कि लोग अपने जैसे इन्सान की चापलूसी तो करते हैं परन्तु खेद ख़ुदा की चापलूसी नहीं करते।

याद रखो कि दुआ के लिए अगर जल्दी जवाब मिल जाए तो प्राय अच्छा नहीं होता तो देरी सफलता का कारण होती है।

इल्मे ताबीर रोया में माल कलेजा होता है,इसी लिए ख़ैरात करना जान देना होता है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हज़रत अक़दस की एक तक़रीर

31 जनवरी 1898 ई नमाज़ फ़ज्र के बाद

इन्सान अपनी प्रकृति में कमाल का अनुकरण करना चाहता है

याद रखो कि फ़ज़ाइल भी फैलने वाली बीमारी की तरह फैलने वाले होने ज़रूरी हैं। मोमिन के लिए हुक्म है कि वह अपने आचरण को इस स्तर पर पहुंचाए कि वह फैलने वाले हो जाएं। क्योंकि कोई उत्तम से उत्तम बात प्रशंसा योग्य और अनुकरण योग्य नहीं हो सकती जब तक उसके अंदर एक चमक और आकर्षण न हो। इस की चमक दूसरों को अपनी तरफ़ आकर्षित करती है और जज़ब उनको खींच लाता है और फिर उस कर्म की उच्च दर्जे की विशेषताएं अपने आप दूसरे को कर्म की तरफ़ ध्यान दिलाती हैं। देखो! हातिम का नेक-नाम होना दयालुता के कारण मशहूर है। यद्यपि मैं नहीं कह सकता कि वह ख़ुलूस से था। ऐसा ही रुस्तम वासफ़ंद यार की बहादुरी के फ़साने सारे लोगों की ज़बान पर हैं यद्यपि हम नहीं कह सकते कि वे ख़ुलूस से थे। मेरा ईमान और मज़हब यह है कि जब तक इन्सान सच्चा मोमिन नहीं बनता उसके नेकी के काम चाहे कैसे ही महान हों परन्तु वह दिखावा के खोल से ख़ाली नहीं होते। परन्तु चूँकि उनमें नेकी की असल मौजूद होती है और ये वह सम्मान के योग्य गुण है जो हर स्थान पर इज़्ज़त की निगाह से देखा जाता है। इस लिए इसी कारण से धोखाबाज़ी तथा दिखावा वे इज़्ज़त से देखे जाते हैं।

ख़्वाजा साहिब ने मेरे पास एक नक़ल ब्यान की थी और ख़ुद मैंने भी इस क़िस्सा को पढ़ा है कि सर फ़लिप सिडनी मलिका एलज़ाबैथ के ज़माना में क़िला ज़ुल्फ़िन मुल्क हॉलैंड के घेराव में जब ज़ख़्मी हुआ ,तो उस वक़्त ठीख मृत्यु की तल्ख़ी और प्यास शिद्दत के वक़्त जब उसके लिए एक पियाला पानी का जो वहां बहुत कम था, उपलब्ध किया गया तो उसके पास एक और ज़ख़्मी सिपाही था जो बहुत ही प्यासा था। वह सर फ़लिप सिडनी की तरफ़ हसरत और लालच के साथ देखने लगा। सिडनी ने इस की यह इच्छा देखकर वह पानी का प्याला ख़ुद न पिया बल्कि बतौर कुरबानी यह कह कर इस सिपाही को दे दिया कि " तेरी ज़रूरत मुझसे ज़्यादा है" मरने के वक़्त भी लोग दिखावे से नहीं रुकते। ऐसे काम अक्सर दिखावा करने वालों से हो जाते हैं,जो अपने आपको उच्च आचरण वाले वाले इन्सान साबित करना या दिखाना चाहते हैं। अत: कोई इन्सान ऐसा नहीं है कि इस की सारी बातें बुरी हालत की अच्छी हूँ,परन्तु प्रश्न यह है कि इन्सान अच्छी बातों का क्यों अनुकरण

शेष पृष्ठ 12 पर

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

आं हज़रत (स) ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि को नमाज़ में यह दुआ मांगने की नसीहत फरमाई

(833)हज़रत आयशा रज़ि अल्लाह अन्हा से रिवायत है कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना आप नमाज़ में दज्जाल के फ़ित्ना से पनाह मांगते थे।

(834)हज़रत अब्बू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाह अन्हो से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा आप मुझे दुआ सिखाएँ जो मैं नमाज़ में किया करूँ। आप ने फ़रमाया यह दुआ किया करो।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ ظُلْمًا كَثِيْرًا وَّلَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ فَاغْفِرْلِیْ مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِیْ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ

अनुवाद: हे अल्लाह !मैं ने अपनी जान पर बहुत ज़ुल्म किया है और तेरे सिवा कोई भी गुनाहों की मग़फ़िरत करने वाला नहीं है। अत: अपनी तरफ से मेरी मग़फ़िरत फ़र्मा और मुझे रहमत से नवाज़। अवश्य तू ही बहुत अधिक क्षमा करने तथा बहुत अधिक दया करने वाला है

(868)हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा अन्सारी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मैं तो नमाज़ के लिए खड़ा होता हूँ और मैं उसे लंबा करने का इरादा रखता हूँ इतने में बच्चे के रोने की आवाज़ सुनता हूँ तो मैं अपनी नमाज़ छोटी कर देता हूँ क्योंकि मुझे नापसंद होता है कि मैं उसकी माँ को कष्ट दूं।

(सही बुख़ारी, भाग 2 किताबुल अज़ान, प्रकाशन कादियान 2006 ई)

हलाल चीज़ों में से सबसे ज़्यादा नापसंदीदा चीज़ ख़ुदा तआला के निकट तलाक़ है।

जब लोग अपने दोस्तों की नाराज़गी और क़ौम की नाराज़गी का ध्यान रखते हैं तो क्या ख़ुदा तआला की नाराज़गी ही ऐसी चीज़ है जिससे इन्सान को लापरवाह हो जाना चाहिए।

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब खलीफ-तुल मसीह सानी फरमाते हैं कि

"रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं اِنَّ اَبْغَضَ الْحَلَالِ عِنْدَ اللّٰهِ الطَّلَاقُ अर्थात हलाल चीज़ों में से सबसे ज़्यादा नापसंदीदा चीज़ ख़ुदा तआला के निकट तलाक़ है। जब तलाक़ हलाल चीज़ों में से सबसे ज़्यादा नापसंदीदा है तो एक मोमिन जिसके दिल में अल्लाह तआला की मुहब्बत है वह इस चीज़ के किस तरह निकट जा सकता है जिसके बारे में वह समझता हो कि यह अल्लाह तआला को सख़्त ना पसंद है। हर काम जो जायज़ है ज़रूरी नहीं कि उसे किया भी जाए। हर शख़्स जानता है कि बनारस ,कलकत्ता, मद्रास या बम्बई इत्यादि जाना हलाल है लेकिन कितने हैं जो इन जगहों में गए हैं। अगर हलाल के यही अर्थ हैं कि उसे ज़रूर किया जाए तो फिर तो यह होना चाहिए था कि जिन लोगों के पास इन शहरों में जाने के लिए रुपया न था वे अपनी जायदादें बेच डालते और इस हलाल काम को ज़रूर सरअंजाम देते लेकिन लोगों का इस पर अनुकरण न करना बताता है कि वे ये समझते हैं कि जो बात हलाल है ज़रूरी नहीं कि इस पर अनुकरण भी किया जाए बल्कि उचित अवसर

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, सितम्बर अक्तूबर 2019 ई (भाग-24)

एक पत्रकार का हुज़ूर अनवर से इंटरव्यू,एंबेसडर की हुज़ूर से मुलाक़ात

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

23 अक्तूबर 2019 ई (दिनांक बुधवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह 6 बजकर 45 मिनट पर मस्जिद ख़दीजा में तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक , ख़ुतूत और रिपोर्टें देखीं और हिदायतों से नवाज़ा।

एक पत्रकार का हुज़ूर अनवर से इंटरव्यू

आज प्रोग्राम के अनुसार Deutschland रेडियो की एक औरत पत्रकार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से इंटरव्यू के लिए आई हुई थीं। इसके अतिरिक्त एंबेसडर Berresheim साहिब जो कि डायरेक्टर आफ़ दी डिपार्टमैंट रिलीजन ऐंड पालीटकस मिनिस्ट्री आफ़ फ़ौरन अफ़ईरज़ हैं वह भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात के लिए आए थे।

10 बजकर 35 मिनट पर हज़ूर अनवर अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और रेडियो Deutschland की औरत पत्रकार ने हुज़ूर अनवर से इंटरव्यू लिया।

औरत पत्रकार ने कहा कि मैंने कल आपकी तक़रीर सुनी थी। मेरा पहला सवाल यह है कि आपने बात की थी कि यूरोप के अंदर नास्तिकता में वृद्धि हो रही है जो कि यूरोप के लिए इस्लाम की तुलना में अधिक ख़तरा वाली बात है इसलिए आपने लोगों को धर्म की तरफ़ लेकर आने की बात की चाहे वे ईसाईयत हो, यहूदियत हो या कोई भी धर्म हो। आपके विचार में अख़लाक़ी इक़दार को नास्तिकता से क्या ख़तरा है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: बाईबल सहित समस्त धार्मिक पुस्तकों और क़ुरआन करीम में कई अख़लाक़ी बातों का वर्णन मिलता है जिनका बिल्कुल ध्यान नहीं रखा जा रहा। उदाहरण के तौर पर माता पिता का उस तरह सम्मान नहीं किया जाता जैसा कि पहले किया जाता था या धार्मिक पुस्तकों की शिक्षाओं के अनुसार नहीं किया जाता। इस तरह दैनिक की और भी कई बातें हैं जिनका पूरी तरह सम्मान नहीं किया जा रहा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आप अख़बारों में भी पढ़ सकते हैं, रिपोर्टें आती रहती हैं कि बच्चे कहते हैं कि उनके माता पिता का उनके साथ व्यवहार ठीक नहीं है जबकि माता पिता का दृष्टिकोण विभिन्न होता है। अब माता पिता ने यह आवाज़ उठाना शुरू कर दी है कि बच्चों को इतनी आज़ादी नहीं मिलनी चाहिए जितनी कि उन्हें मिली हुई है। इस तरह कई अख़लाक़ी इक़दार हैं जिनको इस समाज में नज़रअंदाज किया जा रहा है। इसी लिए मैं कहता हूँ कि कई अख़लाक़ी इक़दार जिनका वर्णन धार्मिक पुस्तकों में मिलता है उनका ध्यान नहीं रखा जा रहा।

पत्रकार ने सवाल किया कि आपने धार्मिक आज़ादी और आपसी भाईचारा के महत्त्व के हवाला से बात की थी परन्तु यदि आप इस्लामी देशों को देखें तो बहुत से इस्लामी देशों में अल्पसंख्यकों के लिए बर्दाश्त और बराबरी नहीं मिलती जैसा कि जमाअत अहमदिया को भी इस बात का सामना करना पड़ता है। तो क्या यूरोप में मौजूद धार्मिक आज़ादी आपको और अधिक तरक़्क़ी करने का अवसर उपलब्ध नहीं कराती है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: यूरोप में बहरहाल एक सकारात्मक बात ज़रूर पाई जाती है कि आपको आज़ादी इज़हार राय या धर्म तथा अक़ीदा की आज़ादी प्राप्त है। तो अवश्य यहां यह चीज़ है कि आप जिस चाहे अक़ीदा को मानते हैं इस पर अनुकरण कर सकते हैं और इसका इज़्हार कर सकते हैं परन्तु कई इस्लामी देशों में इस हक़ को नकारा जा रही है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया क़ुरआन करीम भी कहता है कि धर्म के मामला में कोई जबर नहीं और हम भी इसी पर ईमान रखते हैं। परन्तु इसके साथ साथ जब हम अपने अक़ीदा का प्रचार करते हैं या उसकी अभिव्यक्ति करते हैं तो यदि लोगों को यह पैग़ाम पसंद आता है और यदि यह पैग़ाम अच्छा है तो लोग उसे स्वीकार कर लेंगे। मुझे आशा है कि यहां बेहतर शिक्षा के माध्यम उपलब्ध हैं या यहां के लोगों का जब भी धर्म की तरफ़ ध्यान होगा तो यह लोग देखेंगे कि इस्लामी शिक्षाएं उनकी रुहानी तरक़्क़ी के लिए और उन्हें धर्म की तरफ़ वापस ले जाने में बहुत लाभदायक हैं। इसलिए हम आशा करते हैं कि यदि लोगों की धर्म की तरफ़ ध्यान होगी तो यहां इस्लाम बहुत तरक्की करेगा।

पत्रकार ने सवाल किया कि अहमदियों को अपनी जमाअत से बाहर शादी करने की आज्ञा नहीं होती। आप उसको अक़ीदा की आज़ादी के साथ किस तरह जोड़ते हैं? क्या पसन्द की शादी करने में आज़ादी प्राप्त है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: यह बात पूर्णत: उचित नहीं है। असल बात यह है कि कई बार औरतें मर्दों के प्रभाव के अधीन आ जाती हैं, इसलिए हम कहते हैं कि यदि एक अहमदी लड़की जमाअत से बाहर शादी कर रही है तो संभव है कि लड़की और उनके बच्चे मर्द के प्रभाव के अधीन आ जाऐं। फिर हम देखते हैं कि यदि मर्द और औरत का सम्बन्ध विभिन्न धर्मों से हो तो कुछ समय बाद ही मतभेद शुरू हो जाते हैं जिसके कारण से उनके घर ख़राब हो जाते हैं। दूसरी तरफ़ कई लड़कियां मुझसे आज्ञा माँगती हैं तो मैं उन्हें आज्ञा दे भी देता हूँ। इसके अतिरिक्त अहमदी मर्द भी जमाअत से बाहर शादियां करते हैं और कई ऐसे अहमदी मर्द हैं जिनकी बीवियां ईसाई या दूसरे धर्मों से सम्बन्ध रखती हैं। बहरहाल हमारी यह आस्था है कि एक मोमिन को ऐसे व्यक्ति से ही शादी करनी चाहिए जो कि एक ख़ुदा पर ईमान लाता हो और बुतों की पूजा न करता हो।

पत्रकार ने सवाल किया कि कल के आयोजन में मुझे कोई अहमदी औरत नज़र नहीं आई। इस बारे में आपकी क्या राय है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: कल का जो फंक्शन था वह बाहर के लोगों के लिए था, काफ़ी लोगों को बुलाया गया था और बहुत से लोगों ने हामी भरी थी कि वे इस फंक्शन में शामिल होंगे परन्तु वहां सीमित सीटें थीं और जो इस फंक्शन को आर्गेनाईज़ कर रहे थे वे मर्द ही थे। वर्ना हम इस तरह के जो भी फंक्शन आयोजित करते हैं उनमें उन औरतों को भी बैठने की आज्ञा होती है जो अपने साथ मेहमान लेकर आती हैं। परन्तु कल के फंक्शन में जिन लोगों को बुलाया गया और जिन्होंने शमूलीयत की हामी भरी थी और कोई भी अहमदी औरत मेहमान नहीं लेकर आ रही थीं और आयोजन में मर्द ही शामिल थे इसी लिए वहां कई मर्द थे और कोई भी अहमदी औरत न थीं। परन्तु आम तौर पर हमारी मस्जिदों के आयोजनों और दूसरे फंक्शनों में काफ़ी औरतें भी आती हैं।

पत्रकार ने कहा कि मैंने यह पढ़ा है कि अहमदी औरतों के लिए सबसे पहला स्थान घर ही है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: पहली बात तो यह है कि इस्लाम ने मर्दों और औरतों के कर्तव्यों का विभाजन किया हुई है। इसके अनुसार कमाने की ज़िम्मेदारी मर्दों पर है, आर्थिक तौर पर घरों को वही चलाते हैं और प्राय औरतें घर का ध्यान रखती हैं और बच्चों की तर्बीयत करती हैं। परन्तु इसके साथ साथ हम औरत के शिक्षा प्राप्त करने के हक़ से मना नहीं करते। यदि कोई औरत पढ़ी लिखी है, इंजीनियर है या डाक्टर है या उस्ताद है या किसी और कला में शिक्षा प्राप्त है तो वे बाहर जाती हैं और काम भी करती हैं। परन्तु जब वे घरों में आती हैं तो उन्हें घरों का ध्यान रखना होता है। तो पहली बात यही है कि यह कर्तव्यों का विभाजन है जिसके अनुसार मर्द बाहर काम करते हैं और औरतें घरों में काम करती हैं। परन्तु यदि किसी औरत में योग्यता है या किसी विशेष क्षेत्र में महारत रखती है तो वह बाहर जा कर काम भी कर सकती है

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

मैं तुम्हारे बारे में मोहताजी से नहीं डरता बल्कि मैं इस बात से डरता हूँ कि दुनिया तुम पर खोल दी जाए और फिर तुम बढ़ चढ़ कर लालच करने लग जाओ। (अल-हदीस)

हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि अल्लाह अन्हो ने हज़रत अबू बकर रज़ि की तब्लीग़ से मुसलमानों के दारे अरक़म में पनाह लेने से पहले नौवें नम्बर पर इस्लाम स्वीकार किया।

दस हिज्री, हज्जतुल विदा के अवसर पर हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हज किया।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि की इताअत की कैफ़ीयत सुनी तो फ़रमाया रहिमहुल्लाह अबा उबैदह कि अबू उबैदह पर अल्लाह की रहमत हो कि उसने यह इताअत का स्तर स्थापित किया।

अमीनुल उम्मत, अश्रा मुबश्शिरा की बिशारत वाले, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान बदरी सहाबी हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि अल्लाह अन्हो के प्रशंसनीय गुणों का वर्णन।

हम तो पहले भी इन कष्टों से गुज़रते रहे हैं, अब भी इंशा अल्लाह तआला अल्लाह तआला की मदद से गुज़र जाऐंगे परन्तु यदि ये विरोधी रुके ना तो इनकी तबाही यक़ीनी है।

अहमदियत के विरोधियों को चेतावनी और पाकिस्तानी अहमदियों को अल्लाह तआला से सम्बन्ध में बढ़ने और दुआएं करने की नसीहत

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :मैं ज़रूर तुम्हारे साथ एक ऐसे अमीन व्यक्ति को भेजूँगा जो इसका हक़ अदा करने वाला है। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि का हाथ पकड़ा और फ़रमाया हाज़ा अमीनो हाज़ेहिल उम्मत। यह इस उम्मत के अमीन है ।

हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि ने ख़ौद के इन दो हलक़ों में से एक को अपने दाँत से पकड़ा और इतने ज़ोर से खींचा। इतनी मज़बूती से वे अंदर गढ़ गए थे कि जब खींच कर निकाला तो आप कमर के बल ज़मीन पर गिर गए और आप का सामने का एक दाँत टूट गया। फिर आप ने दूसरे हलक़े को भी दाँतों से पकड़ कर ज़ोर से खींच कर बाहर निकाला कि आप का सामने का दूसरा दाँत भी टूट गया।

देखो जब तुम दुश्मन पर ग़ल्बा पाओ तो किसी बच्चे, बूढ़े और औरत को क़त्ल न करना,किसी जानवर को हलाक न करना, वादा न तोड़ना, मुआहिदा कर के उसे न तोड़ना।

पाँच मरहूमीन मौलाना तालिब याक़ूब साज़ा ख़लील अहमद बेग साहिब उस्ताद जामिआ अहमदिया इंटरनेशनल घाना का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़े जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 2 अक्तूबर 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक़ इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

बदरी सहाबा के वर्णन में जिन सहाबी का वर्णन होगा वह हैं हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि। हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि का नाम आमिर बिन अब्दुल्लाह था और उनके पिता का नाम अब्दुल्लाह बिन जर्राह था। हज़रत अबू उबैदह रज़ि अपनी कुनिय्यत की वजह से अधिक मशहूर हैं जबकि आप के वंस को आप के दादा जर्राह से जोड़ा जाता है। आप की माता का नाम उमैम: बिन्त ग़नम था और आप का सम्बन्ध क़बीला क़ुरैश के ख़ानदान बनू हारिस बिन फ़िहर से था।

(अल-असाबा फ़ी तमीज़िस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 475 आमिर बिन अब्दुल्लाह , दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान,2005 ई)

हज़रत अबू उबैदह रज़ि का यह हुलिया वर्णन किया जाता है कि उनका क़द लम्बा था, जिस्म पतला था, दुबले पुतले थे और चेहरे पर कम गोश्त था। सामने के दो दाँत जंग उहद के अवसर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चेहरे में फंसे हुए ख़ुद के हलक़ों को निकालते हुए टूट गए थे। आप रज़ि की दाढ़ी अधिक घनी न थी और आप रज़ि ख़िज़ाब का प्रयोग किया थे।

(उद्धरित अज़ सैरुस्सहाब: भाग 2 पृष्ठ 135 हज़रत अबू उबैदह बिन अलजर्राह, दारुल इशाअत उर्दू बाज़ार कराची)

हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि ने कई शादियां की थीं परन्तु उनमें सिर्फ दो बीवियों से औलाद हुई। आप रज़ि के दो बेटे थे एक का नाम यज़ीद और दूसरे का नाम अमीर था।(उद्धरित रोशन सितारे लेखक ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब भाग 2 पृष्ठ 41)

हज़रत अबू उबैदह रज़ि उन दस सहाबा में से हैं जिनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी ज़िन्दगी में जन्नत की बशारत दी थी, जिनको अश्रा मुबश्शिरा कहते हैं।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 22 आमिर बिन अब्दुल्लाह , दारुल फिक्र बेरूत,2003 ई)

हज़रत अबू उबैदह की गिनती शुमार क़ुरैश के वक़ार वाले, आचरण वाले और शर्म वाले लोगों में होती थी।

(अल-असाबा फ़ी तमीज़िस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 477 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान,2005 ई)

हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने हज़रत अबूबकर रज़ि की तब्लीग़ से इस्लाम स्वीकार किया। उस वक़्त मुसलमान अभी दारे अरक़म में पनाह लेने वाले नहीं हुए थे इस से पहले की बात है। हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि का इस्लाम लाने में नवां नम्बर है

(अश्रा मुबश्शिरा लेखक बशीर साजिद पृष्ठ 798 अल-बदर पब्लिकेशनज़ उर्दू बाज़ार लाहौर,2000 ई)

(उद्धरित सैरुस्सहाब: भाग 2 पृष्ठ 124 प्रकाशन दारुल इशाअत कराची)

हज़रत अनस रज़ि अल्लाह तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हर उम्मत का एक अमीन होता है और मेरी उम्मत के अमीन अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि हैं।

(सही अलबख़ारी किताबुल फ़ज़ाइल अस्हाबुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाब मनाक़िब अबी उबैदह बिन अलजर्राह रज़ि, हदीस नम्बर 3744)

सही बुख़ारी और सही मुस्लिम की रिवायतों के अनुसार नजरान के लोग जबकि सही मुस्लिम की एक और रिवायत के अनुसार यमन के लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए और निवेदन किया कि हमारे साथ किसी ऐसे व्यक्ति को भेजें जो हमें धर्म सिखाए। एक रिवायत में आता है कि उन्होंने निवेदन किया कि हमारे साथ किसी अमीन व्यक्ति को भेजें। इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :मैं ज़रूर तुम्हारे साथ एक ऐसे अमीन व्यक्ति को

भेजूँगा जो इसका हक़ अदा करने वाला है। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि का हाथ पकड़ा और फ़रमाया

هٰذَا أَمِيْنُ هٰذِهِ الْأُمَّةِ

यह इस उम्मत का अमीन है।

(सही बुख़ारी किताब फ़ज़ाइल अस्हाबुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाब मनाक़िब अबी उबैदह बिन अलजर्राह रज़ि हदीस नम्बर3745)

(सही मुस्लिम किताब फ़ज़ाइल अलसहाबा बाब मन फ़ज़ाइल अबी उबैदह बिन अलजर्राह रज़ि, हदीस नम्बर 2419-2420)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अबू बकर रज़ि, उमर रज़ि, अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि, उसैद बिन हुज़ैर रज़ि, साबित बिन क़ैस बिन शम्मस रज़ि, मुआज़ बिन जबल रज़ि और मुइज़ बिन अमरो बिन जमूह रज़ि कितने अच्छे इन्सान हैं।(जामे तिर्मिज़ी अबवाबुल मनाकिब बाब मनाक़िब मआज़ बिन जबल व ज़ैद बिन साबित रज़ि..., हदीस नम्बर 3795)अर्थात आप ने एक बार उनकी प्रशंसा फ़रमाई। एक मज्लिस में उनका वर्णन हुआ होगा जिसका उदाहरण हज़रत अबू हरैरह रज़ि ब्यान कर रहे हैं।

एक बार हज़रत आयशा रज़ि से पूछा गया कि यदि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने बाद किसी को जांनशीन बनाते तो किसे बनाते? इस पर हज़रत आयशा रज़ि ने फ़रमाया हज़रत अबूबकर रज़ि को। लोगों ने पूछा और हज़रत अबू बकर रज़ि के बाद किसे? हज़रत आयशा रज़ि ने फ़रमाया हज़रत उमर रज़ि को। लोगों ने पूछा हज़रत उमर रज़ि के बाद किसे? तो हज़रत आयशा रज़ि ने फ़रमाया कि हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि को। यह सही मुस्लिम की रिवायत है।

(सही मुस्लिम किताब फ़ज़ाइल सहाबा बाब फ़ज़ाइल अबी बकर अस्सिद्दीक़ रज़ि हदीस नम्बर 2385)

एक दूसरी रिवायत में है कि अब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ ने हज़रत आयशा रज़ि से पूछा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपने सहाबा में सबसे अधिक प्रिय कौन था? हज़रत आयशा रज़ि ने फ़रमाया हज़रत अबू बकर रज़ि। उसने पूछा कि हज़रत अबूबकर रज़ि के बाद कौन? हज़रत आयशा रज़ि ने फ़रमाया हज़रत उमर रज़ि। उसने पूछा कि हज़रत उमर रज़ि के बाद कौन? हज़रत आयशा रज़ि ने फ़रमाया हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि। फिर उसने पूछा उस के बाद कौन? रावी कहते हैं कि फिर हज़रत आयशा रज़ि ख़ामोश रहीं।

(जामा तिर्मिज़ी किताबुल मनाकिब, बाब मनाक़िब अबी बकर सिद्दीक़ रज़ि , हदीस नम्बर 3657)

"सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन मैं हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि बयान फ़रमाते हैं कि

"हज़रत आयशा रज़ि की नज़र में अबू उबैदह रज़ि का इतना सम्मान तथा महत्व था कि वह कहा करती थीं कि यदि हज़रत उमर रज़ि की वफ़ात पर अबू उबैदह रज़ि ज़िन्दा होते तो वही ख़लीफ़ा होते।"

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 123)

एक रिवायत में है कि हज़रत उमर रज़ि ने अपनी वफ़ात के वक़्त फ़रमाया कि यदि आज हज़रत अबू उबैदह रज़ि ज़िन्दा होते तो मैं उन्हें ख़लीफ़ा चुनता और यदि मेरा रब मुझसे इस बारे में पूछता कि तुमने उसे क्यों नामज़द किया है तो मैं निवेदन करता कि मैं ने तेरे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है कि अबू उबैदह रज़ि इस उम्मत का अमीन है। इसलिए उसे जांनशीन बनाया है।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्न सअद भाग 3 पृष्ठ 315 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान,2012 ई)

जब हज़रत अबू उबैदह रज़ि ईमान लाए तो उनके पिता ने उनको बहुत कष्ट पहुंचाएं। आप रज़ि हिजरत हब्शा में भी शरीक थे। हज़रत अबू उबैदह रज़ि मदीना हिजरत कर के आए तो आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का चेहरा उन्हें देखकर चमक उठा। हज़रत उम्र रज़ि अल्लाह तआला अन्हो ने आगे बढ़कर गले लगाया और आप रज़ि ने हज़रत कुलसूम बिन हिदम रज़ि के घर निवास किया। उम्मे कुलसूम नहीं बल्कि हज़रत कुलसूम बिन हिदम के घर निवास किया।

(उद्धरित अज़ रोशन सितारे अज़ ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब, भाग 2 पृष्ठ 11-12)

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्न सअद भाग 3 पृष्ठ 313 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत, 2012 ई)

हज़रत अबू उबैदह रज़ि के भाई बनाने के बारे में विभिन्न रिवायतें मिलती हैं। कुछ के अनुसार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू उबैदह रज़ि का भाई हज़रत अबू हुज़ैफ़ह रज़ि के आज़ाद किए गए ग़ुलाम हज़रत सालिम रज़ि के साथ फ़रमाई। कुछ के निकट आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप रज़ि का भाई हज़रत मुहम्मद बिन मुसलमा रज़ि के साथ क़ायम फ़रमाई और कुछ के नज़दीक आप रज़ि का भाई हज़रत सअद बिन मआज़ रज़ि के साथ क़ायम फ़रमाया।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्न सअद भाग 3 पृष्ठ 313 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत,2012 ई)

(अल-असाबा फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 476 आमिर बिन अब्दुल्लाह , दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान,2005 ई) हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि ने जंग बदर, उहद और अन्य समस्त जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शिरकत की।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्न सअद भाग 3 पृष्ठ 313 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत,1990 ई)

जंग बदर के वक़्त हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि की उम्र 41 साल थी

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्न सअद भाग 3 पृष्ठ 316 अबू उबैदह बिन जर्राह, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान,2012 ई)

जंग बदर के दिन हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि मुसलमानों की तरफ़ से मैदाने जंग में आए और आप रज़ि का बाप अब्दुल्लाह कुफ़्फ़ार की तरफ़ से मैदान में आया। बाप बेटा आमने सामने हुए। बाप ने जंग के दौरान बेटे को निशाना बनाना चाहा परन्तु हज़रत अबू उबैदह रज़ि तरह देते रहे, एक तरफ़ निकलते रहे, बचते रहे परन्तु बाप ने पीछा न छोड़ा। बाप की कोशिश थी कि आपको किसी तरह मार दे। आप रज़ि को भी अवसर था, आप रज़ि भी यह कर सकते थे परन्तु आप रज़ि यही कोशिश करते रहे कि बाप से बचते रहें। न उसको मारें और ख़ुद भी बचे रहें। जब हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने देखा कि बाप पीछा ही नहीं छोड़ रहा तो तौहीद की भावना वंश के सम्बन्ध पर ग़ालिब आया। फिर रिश्तेदारी कोई चीज़ नहीं रही। जब आप रज़ि ने देखा कि अब तो पक्का इरादा किए बैठा है कि मुझे मारना है और सिर्फ इसलिए मारना है कि मैं तौहीद पर ईमान ले आया हूँ और लिखा है कि तौहीद की भावना वंश की सम्बन्ध पर ग़ालिब आया और जब यह हो गया, जब देखा कि पीछा नहीं छोड़ रहा तो फिर अब्दुल्लाह जो उनका बाप था अपने ही बेटे हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि के हाथों क़तल हुआ। आख़िर उसको फिर मजबूर होकर उन को मारना पड़ा।

(उद्धरित अज़ सैरुस्सहाब: भाग 2 पृष्ठ 124 प्रकाशन दारुल इशाअत कराची)

जंग उहद के दिन अब्दुल्लाह बिन क़ैमआ ने आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ज़ोर से पत्थर मारा जिससे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का चेहरा मुबारक ज़ख़्मी हो गया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक दांत शहीद हो गए। इस पर उसने नारा मारा कि यह लो कि मैं इब्ने क़ैमआ हूँ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने मुबारक चेहरा से ख़ून साफ़ करते हुए फ़रमाया अल्लाह तुझे अपमानित करे। रावी कहते हैं कि फिर ऐसा हुआ कि अल्लाह ने इस पर एक पहाड़ी बकरा मुसल्लत कर दिया जिसने उसे निरन्तर सींग मारे यहां तक कि उसको टुकड़े टुकड़े कर दिया।

(अलमअजमुल- कबीर लित्तबरानी भाग 8 पृष्ठ 154 हदीस 7596 मकतबा इब्ने तीमयह क़ाहिरा,1994 ई)

इस घटना के बारे में हज़रत आयशा रज़ि की रिवायत है कि हज़रत अबू बकर रज़ि बयान फ़रमाते हैं कि जंग उहद के दिन जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चेहरे पर पत्थर मारा गया तो वह इतने ज़ोर से लगा कि आप के खोद के दो हलक़े टूट कर, उसकी कड़ियाँ जो थीं वे टूट कर आप के मुबारक चेहरे में धंस गईं। इस पर हज़रत अबूबकर रज़ि कहते हैं कि मैं दौड़ता हुआ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ गया तो मैं ने देखा कि एक व्यक्ति इतनी तेज़ी से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ बढ़ रहा था गोया कि उड़ कर आ रहा हो। इस पर मैं ने दुआ की कि ए अल्लाह !उस व्यक्ति को ख़ुशी का कारण बना। अर्थात यह जो दौड़ा जा रहा है यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए भी, हमारे लिए भी ख़ुशी का कारण बने। जब हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुंचे तो मैं ने देखा कि वह अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि थे जो मुझसे सबक़त ले गए। उन्होंने मुझसे कहा हे अबू बकर रज़ि मैं आप रज़ि

को अल्लाह की कसम देकर कहता हूँ कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक चेहरे से उन हलक़ों को निकालने दें अर्थात वह जो ख़ौद के अंदर जबड़े में चुभ गए थे उनको निकालने दें। हज़रत अबू बकर रज़ि फ़रमाते हैं कि मैं ने उन्हें ऐसा करने दिया। अत: हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि ने खोद के इन दो हलक़ों में से एक को अपने दाँत से पकड़ा और इतने ज़ोर से खींचा। इतने मज़बूती से वह अंदर गढ़ गए थे कि जब खींच कर निकाला तो आप रज़ि कमर के बल ज़मीन पर गिर गए और आप रज़ि का सामने का एक दाँत टूट गया। फिर आप रज़ि ने दूसरे हलक़े को भी दाँतों से पकड़ कर ज़ोर से खींच कर बाहर निकाला कि आप रज़ि का सामने का दूसरा दाँत भी टूट गया। जंग उहद के अवसर पर जब लोग बिघर गए थे तो हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि उन लोगों में से थे जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास दृढ़ता से मौजूद रहे

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्न सअद भाग 3 पृष्ठ 313 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत,1990 ई)

ज़िल-कअदा छ: हिजरी में सुलह हुदैबिया के अवसर पर जब सुलह नामा लिखा गया तो इस मुआहिदे की दो नक़लें तैयार की गईं और बतौर गवाह के दोनों पक्षों के कई सम्मान्नीय लोगों ने उन पर अपने दस्तख़त किए। मुसलमानों की तरफ़ से दस्तख़त करने वालों में से हज़रत अबू बकर रज़ि, हज़रत उमर रज़ि, हज़रत उसमान रज़ि, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि, हज़रत सअद बिन अबी वकास रज़ि और हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि थे।

(उद्धरित अज़ सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम-ए पृष्ठ 769)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि को कई सराया (जंगों), सरिया का बहुवचन सराया अर्थ है जंगों में भिजवाया था। जो expeditions होती हैं उनमें भिजवाया था

ज़ुल्किस्सा की तरफ़ सरिया। यह सरिया रबीउल आख़िर छ: हिजरी में भिजवाया गया था। इसके बारे में हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए अपनी पुस्तक "सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन" में लिखते हैं कि रबीउल आख़िर के महीना में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा अन्सारी रज़ि को ज़ुल क़िस्सा की तरफ़ रवाना फ़रमाया जो मदीना से चौबीस मील की दूरी पर था जहां उन दिनों में बनू सअलब: आबाद थे। हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि और उनके दस साथी रात के वक़्त वहां पहुंचे तो देखा कि उस क़बीला के सौ नौजवान जंग के लिए तैयार बैठे हैं। सहाबा की जमाअत से यह पार्टी संख्या में दस गुना अधिक थी। हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़िओ ने फ़ौरन उस लश्कर के सामने सफ़ें सीधी कर ली। यदि जंग की नीयत से गए होते तो इतनी थोड़ी संख्या में न होते। और दोनों पक्षों के मध्य रात के अन्धेरे में ख़ूब तीर-अंदाज़ी हुई। इसके बाद कुफ़्फ़ार ने सहाबा की मुट्ठी भर जमाअत पर धावा बोल दिया और चूँकि उनकी संख्या बहुत अधिक थी एक क्षण की क्षण में इस्लाम के फ़िदाईन दस मिट्टी पर थे। अर्थात शहीद हो गए। हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि के साथी तो सब शहीद हो गए परन्तु ख़ुद हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि बच गए क्योंकि कुफ़्फ़ार ने उन्हें दूसरों की तरह मुर्दा समझ कर छोड़ दिया और उन के कपड़े इत्यादि उतार कर ले गए। शायद हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि भी वहां पड़े पड़े फ़ौत हो जाते परन्तु संयोग से एक और मुसलमान का वहां से गुज़र हुआ और उसने हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि को पहचान कर उन्हें उठा कर मदीना पहुंचा दिया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब इन हालात का ज्ञान हुआ तो आप ने हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि को जो क़ुरैश में से थे और बड़े सहाबा में गिनती होती थे हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि के इंतिक़ाम के लिए ज़ुलउल क़िस्सा की तरफ़ रवाना फ़रमाया और चूँकि इस समय में यह भी सूचना प्राप्त हो चुकी थी कि क़बीला बनू सअलबा के लोग मदीना के देहातों पर हमला का इरादा रखते हैं इसलिए आप ने हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि की कमान में चालीस तत्पर सहाबा की जमाअत भिजवाई और हुक्म दिया कि रातों रात सफ़र करके सुबह के वक़्त वहां पहुंच जाएं। हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि ने आदेश के पालन में हमला करके ठीक सुबह की नमाज़ के वक़्त उन्हें जा दबाया और वह इस अचानक हमला से घबरा कर थोड़े से मुक़ाबला के बाद भाग निकले और क़रीब की पहाड़ियों में ग़ायब हो गए। हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि ने माल ग़नीमत पर क़ब्ज़ा किया और मदीना की तरफ़ वापस लौट आए।

(उद्धरित अज़ सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 668)

यह हमला ज़ुल्म का बदला लेने के लिए या सज़ा देने के लिए किया गया था।

दूसरी जो एक जंग थी उस का नाम ज़ात एल्सिला सिल था। इस सरिया को ज़ातुस्सलासिल कहने का कारण है कि दुश्मनों ने इस ख़ौफ़ से आपस में एक दूसरे को ज़ंजीरों से बांध लिया था कि वह इकट्ठे हो कर लड़ सकें और कोई भाग न सके। एक सफ़ बना कर लड़ सकें या जिस तरह भी सफ़ें बनी थीं इकट्ठे इकट्ठे रहें। इसका एक और कारण भी मिलता है कि इस जगह पर एक चश्मा था जिसका नाम अस्सल्सल था। कुछ के निकट आठ हिजरी और कुछ के निकट सात हिजरी में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़बर मिली कि क़बीला बनू क़ुज़ाअह के लोग मदीना पर हमला करने का मन्सूबा बना रहे हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अमरो बिन आस रज़ि को तीन सौ मुहाजिरीन और अन्सार के साथ उस को दूर करने के लिए रवाना फ़रमाया जिनके साथ तीस घोड़े थे। यह जगह मदीना से दस दिन की दूरी पर थी। हज़रत अमरो बिन आस रज़ि ने बनू क़ुज़ाअह के इलाक़े में पहुंच कर वहां से हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पैग़ाम भेजा कि दुश्मन की संख्या बहुत अधिक है इसलिए कुमक भेजी जाए, और अधिक फ़ौज भेजें। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पैग़ाम मिलते ही दो सौ मुहाजरीन और अन्सार की जमाअत हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि की क़ियादत में मदद के लिए रवाना फ़र्मा दी और हिदायत फ़रमाई कि अमरो के साथ जा कर मिलें और मतभेद न करें। अर्थात जो भी फ़ैसला करना है एक हो कर किया जाए। जब यह फ़ौज हज़रत अमरो बिन आस रज़ि की फ़ौज से मिल गई तो सारे लश्कर की इमारत का सवाल पैदा हुआ। हज़रत अबू उबैदह रज़ि यद्यपि अपने मर्तबा की दृष्टि से इमारत के अधिकारी थे परन्तु जब हज़रत अमरो बिन आस रज़ि ने इसरार किया कि में ही सारी फ़ौज की क़ियादत करूँगा तो हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने ख़ुशदिली से उनकी क़ियादत स्वीकार कर ली क्योंकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हुक्म भी था कि मतभेद नहीं करना और उनकी इमारत के अधीन निहायत बहादुरी से दुश्मनों के ख़िलाफ़ लड़ाई लड़े यहां तक कि दुश्मन को शिकस्त हो गई। जब कामयाबी के बाद मदीना वापस आए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि की इताअत की कैफ़ीयत सुनी तो फ़रमाया رَحِمَهُ اللّٰهُ اَبَا عُبَيْدَه कि अबू उबैदह पर अल्लाह की रहमत हो कि उसने यह इताअत का स्तर स्थापित किया।

(उद्धरित अज़ रहमते दारेन के सौ शैदाई लेखक तालिब हाश्मी, पृष्ठ 33 अल-बदर पब्लीकेशनज़ उर्दू बाज़ार लाहौर,2003 ई)

(शरह जरक़ानी भाग 2 पृष्ठ 357 से 360 सरिया ज़ात सलासिल, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत,1996 ई)

फिर है सरिया ज़ातुल बेहर। यह वह सारी जंगें हैं जिनकी फ़ौजों में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शामिल नहीं होते थे। यह सरिया हैं। यह सरिया आठ हिज्री में साहिल समुन्द्र की तरफ़ रवाना हुआ जहां बनू जुहैना का एक क़बीला आबाद था। इस सरिया को जैश ख़ब्त भी कहा जाता है। इस नाम का कारण यह वर्णन किया जाता है कि ख़ुराक की कमी के कारण सहाबा ऐसे दरख़्तों के पत्ते खाने पर विवश हो गए जिन्हें ख़ब्त कहा जाता था। ख़ब्त के एक अर्थ पत्ते झाड़ने के भी है। इस सरिया का वर्णन सही बुख़ारी में है और वह इस तरह वर्णन हुआ है। हज़रत जाबिर रज़ि रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें भेजा। हम तीन सौ सवार थे। हमारे अमीर हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि थे। क़ुरैश के तिजारती क़ाफ़िला की निगरानी में बैठ गए। यहां कोई जंग का इरादा नहीं था। क़ुरैश के क़ाफ़िला की निगरानी करनी थी। समुंद्र के किनारे हम आधा महीना ठहरे रहे और हमें बहुत भूख लगी। यहां तक कि हमने पत्ते भी खाए। कुछ अवसर पर जब सरिया में जाते थे तो उनमें जंगों की नीयत से नहीं जाते थे बल्कि और उद्देश्य होते थे और कई बार फिर जंगों का सामना भी करना पड़ता था इसलिए दोनों दृष्टि से यह सरिया ऐसी मुहिम कहलाते हैं जिसमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सम्मिलित नहीं थे। बहरहाल कहते हैं यहां तक कि हमने पत्ते भी खाए। इसलिए इस फ़ौज का नाम जैशुल ख़ब्त रखा गया। इस समय में समुन्द्र ने हमारे लिए एक जानवर जिसको अन्बर कहते हैं फेंक दिया अर्थात समुंद्र से एक जानवर मर के बाहर आया या वैसे ही बाहर आया और ख़ुश्की में आकर वह पानी के बिना रह नहीं सका तो मर गया। बहरहाल कहते हैं समुन्द्र से एक जानवर आया। वह मछली ही थी, बहुत बड़ी मछली। हम उस का गोश्त आधा महीना खाते रहे और उसकी चर्बी बदन पर मला करते थे यहां तक कि हमारे जिस्म फिर वैसे के वैसे ताज़ा हो

गए जैसे पहले थे। हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने इसकी पस्लियों में से एक पिस्ली ली और इस को खड़ा किया और सबसे लंबा व्यक्ति जो उन के साथ था उसको लिया और सुफ़ियान बिन उयैन: ने अपनी रिवायत में यूं कहा कि एक-बार उन्होंने उस की पस्लियों में से एक पिसिली ली, उसको खड़ा किया फिर एक आदमी ऊंट सहित लिया जो उस के नीचे से गुज़र गया। हज़रत जाबिर रज़ि ने यह भी कहा कि लश्कर में एक व्यक्ति था जिसने लोगों के खाने के लिए तीन दिन तीन तीन ऊंट ज़िब्ह किए। फिर हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने इस को रोक दिया। और अमरो बिन दीनार कहते थे कि अबू सालिह ज़क्वान ने हमें बताया कि कैस बिन सअद ने अपने बाप से कहा में भी इसी फ़ौज में था और उनको भूख लगी तो हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने कहा ऊंट ज़िब्ह कर लो। मैंने ऊंट ज़िब्ह कर लिया। कहते थे फिर उनको भूख लगी। हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने कहा ऊंट ज़िब्ह कर लो। मैंने ऊंट ज़िब्ह कर लिया। कहते फिर उनको भूख लगी। हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने कहा ऊंट ज़िब्ह कर लू। सवारियों वाले जो ऊंट थे और साथ ले के गए थे। इन पर सामान भी कुछ होगा अब ऐसे हालात आ गए कि इन्हीं को ज़िब्ह कर के खा रहे थे। कहते हैं मैं ने ऊंट ज़िब्ह कर लिया। क़ैस कहते थे फिर उनको भूख लगी। हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने कहा कि ऊंट ज़बह कर लो। कहते थे उस के बाद फिर मुझे रोक दिया गया कि अब ऊंट नहीं ज़िब्ह करने।

दूसरी रिवायत में आता है कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि बयान करते हैं कि ज़ैयशुल ख़ब्त के साथ हमले में हम निकले और हज़रत अबू उबैदह रज़ि को अमीर बनाया गया था। हमें सख़्त भूख लगी और समुंद्र ने एक मुर्दा मछली फेंक दी। ज़िन्दा नहीं आई थी बल्कि मुर्दा ही आई थी और हमने ऐसी मछली कभी नहीं देखी थी। बड़ी मछली थी। जिस तरह उस का हुल्या वर्णन किया जाता है यह व्हेल मछली होगी। उसे अन्बर कहते हैं। हम उस का गोश्त आधा महीना खाते रहे। फिर हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने उसकी हड्डियों में से एक हड्डी ली और सवार उस के नीचे से गुज़र गया। इब्न जुरैज ने कहा: अबू ज़ुबैर ने मुझे यह भी बताया कि उन्होंने हज़रत जाबिर रज़ि से सुना है। कहते थे कि हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने कहा खाओ। मछली को खाओ। बेशक यह मुर्दा है परन्तु खाओ कोई हर्ज नहीं। जब हम मदीना आए तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हमने उसका वर्णन किया कि इस तरह एक मुर्दा मछली आई थी और हम इस को खाते रहे, ज़रूरत थी। आप ने फ़रमाया कि जो रिज़्क़ अल्लाह तआला ने निकाला हो उसे तुम खाओ। अल्लाह तआला ने तुम्हारी हालत देखकर तुम्हें भेजा था। उसे तुमने खाया तो कोई हर्ज नहीं। और यदि कुछ है ,यदि अपने साथ कुछ लाए हो तो हमें भी खिलाओ। उनमें से किसी ने आप को एक हिस्सा दिया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस को खाया।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब ग़ज़वा सैफ़ुल बहर हदीस 4361-4362)

वापसी पर इसका बचा हुआ गोश्त कुछ ले भी आए थे, वह फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी खाया।

हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वली उल्लाह शाह साहिब रज़ि इस सरिया सैफुल बहर के अन्तर्गत में अपनी व्याख्या में लिखते हैं सैफ़ुल बहर अर्थात वही जिसको ख़ब्त भी कहते हैं कि ऊपर वर्णित जंग इन जंगों में से है जिनमें किसी से जंग करना मक़सूद नहीं था बल्कि इस जंग में शामिल लोग व्यापारिक क़ाफ़िला की सुरक्षा के उद्देश्य से भेजे गए थे। यह मुहिम इब्न सअद के कथन के अनुसार तीन सौ मुहाजिर तथा अन्सार पर आधारित थी। हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि उसके अमीर थे और ग़ज़वा सैफुल बहर के नाम से मशहूर है। यहां बेहरे क़ुलज़ुम के क़रीब कारवान चलते थे तो कारवानी रास्ता के क़रीब बेहरे क़ुलज़ुम के किनारे हिफ़ाज़ती चौकी स्थापित की गई थी। क़ाफ़िलों का जो रास्ता चलता था उनके निकट बेहरे क़ुलज़ुम के किनारे एक हिफ़ाज़ती चौकी बनाई गई थी इसलिए जंग सैफ़ुल बहर से जानी जाती है। यह फ़ौज भेजने का उद्देश्य यह था कि वहां एक चौकी स्थापित की जाए जो सुरक्षा के उद्देश्य से हो और आगे पता लगेगा कि सुरक्षा किस की करनी थी। सैफ के अर्थ साहिल के हैं। इब्न सअद ने सिरया अल्ख़बत के विषय से इसका संक्षिप्त वर्णन किया है। ख़ब्त के अर्थ हैं दरख़्त के पत्ते। रास्ता की ख़ुराक समाप्त होने के कारण से मुजाहिदीन को पत्ते खाने पड़े थे। इब्न सअद ने तारीख़ वक़्अ रजब आठ हिज्री बताई है और यह ज़माना हुदना अर्थात सुलह हुदैबिया का था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दूर अंदेशी से काम लिया और बतौर सावधानी के ऊपर वर्णन किया गया सुरक्षात्मत दस्ता इलाक़ा सैफुल बहर में भेजा था। जो चौकी क़ायम करवाई गई थी वहां हिफ़ाज़ती दस्ता के तौर पर भेजा ताकि शाम से आने वाले क़ुरैशी क़ाफ़िले से झगड़ा न हो, शाम से जो क़ुरैश का तिजारती क़ाफ़िला आ रहा था इस से कोई छेड़-छाड़ न हो और क़ुरैश के हाथ में मुआहिदा तोड़ने का कोई बहाना न मिल जाए। सुलह हुदैबिया हो चुकी थी। अब यह था कि यह न हो वहां कोई उनको छेड़ दे और क़ुरैश बहाना बना दें कि देखो मुसलमानों ने हम पर हमला किया इसलिए हुदैबिया का मुआहिदा ख़त्म हो गया। तो इसलिए आप ने वह भेजा था। वहां चौकी क़ायम कर दी ताकि क़ुरैश के इस क़ाफ़िले की सुरक्षा करे और कोई बहाना न मिले। फिर लिखते हैं कि ऊपर वर्णन की गया स्थान इब्न सअद के कथन मदीना से पाँच दिन की दूरी पर है।

(उद्धरित अज़ सही अल-बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब ग़ज़वा सैफ़ुल बेहर भाग 9 पृष्ठ 239 प्रकाशित नज़ारत इशाअत रब्वह)

अत: यह जंग के लिए नहीं था बल्कि काफ़िरों की सुरक्ष के लिए भेजा गया था जैसा कि पहले भी मैं ने कहा और यह है अमन के स्थापना की कोशिश कि जब वहां मुआहिदा हो गया तो दुश्मन की सुरक्षा के भी सामान किए जाएं ताकि मुआहिदा तोड़ने का किसी किस्म का बहाना कुफ़्फ़ार के हाथ न आए परन्तु बहरहाल अल्लाह तआला की तक़दीर ने काम करना था। मुआहिदा यदि टूटा तो कुफ़्फ़ार की तरफ़ से तोड़ा गया और फिर वह फ़तह मक्का के रूप में प्रकट हुआ।

हज़रत अबू हरैरह रज़ि बयान करते हैं कि फ़तह मक्का के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए यहां तक कि मक्का में दाख़िल हो गए। हज़रत ज़ुबैर रज़ि को लश्कर के एक पहलू पर और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि को लश्कर के दूसरे पहलू पर निर्धारित फ़रमाया और हज़रत अबू उबैदह रज़ि को पैदल लोगों और वादी के निचली तरफ का सरदार बना दिया

(सही मुस्लिम किताबुल जिहाद बाब फ़तह मक्का हदीस 1780)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बहरीन वालों से ज़िज़्या की शर्त पर सुलह की थी और उन पर हज़रत अली बिन हज़रमी रज़ि को अमीर निर्धारित फ़रमाया था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू उबैदह रज़ि को वहां ज़िज़्या लेने के लिए भेजा। जब हज़रत अबू उबैदह रज़ि ज़िज़्या लेकर वापस आए और लोगों को उनकी वापसी का इल्म हुआ तो सुबह फ़ज्र की नमाज़ सब लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पीछे अदा की। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नमाज़ पढ़ा कर जब पीछे मुड़ कर देखा तो उनको देखकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुस्कुराए और फ़रमाया कि लगता है तुम्हें मालूम हो गया है कि अबू उबैदह रज़ि कुछ लाए हैं। लोगों ने कहा :जी अल्लाह के रसूल आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अत: ख़ुश हो जाओ और इस की उम्मीद रखो जो तुम्हारे लिए बेहतर है। मैं तुम्हारे बारे में मोहताजी से नहीं डरता बल्कि मैं इस बात से डरता हूँ कि दुनिया तुम पर खोल दी जाए और फिर तुम बढ़ चढ़ कर लालच करने लग जाओ।(सही बुख़ारी किताबुल ज़िज़्या वलमवाइद बाबुल जिज़्या वल मवाइल मअ अहले ज़िम्मा वल्हर्ब, नम्बर 3158) जैसे जैसै दुनियादारी में पड़ोगे, दुनियावी सुविधाएं तुम्हें उपलब्ध होंगी मयस्सर आएंगी तो लालच में पड़ जाओगे और वे तुम्हें हलाक कर दे। यह ख़ौफ़ है मुझे। भूखे रहने का ख़ौफ़ कम है। यह ख़ौफ़ है कि दुनियादारी में पड़ के, लालच कर के तुम कहीं अपने आपको हलाक न कर लो। अत: यह चेतावनी है जो हर एक को अपने सामने रखनी चाहिए और इस को सम्मुख न रखने के कारण से आज हम देखते हैं कि मुसलमानों की अधिकता जिनके पास पैसा आता जिनमें हमारे लीडर भी शामिल हैं वे इस लालच में सब से आगे हैं। उनकी दुनिया की लालच बेशुमार बढ़ चुकी है। ख़ुदा का नाम तो लेते हैं परन्तु प्राथमिकता दुनियावी माल तथा सम्मान को है। अत: हमें इस दृष्टि से अपनी हालतों की हमेशा समीक्षा करते रहना चाहिए कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार माल तो आएँगे परन्तु हमें इस माल के कारण से अपने धर्म को नहीं भूल जाना चाहिए।अलिफ

दस हिज्री में हज्जतुल विदा के अवसर पर हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हज किया।

(अश्रा मुबश्शिरा लेखक बशीर साजिद पृष्ठ 801 अलबदर पब्लीकेशनज़ उर्दू बाज़ार लाहौर, 2000 ई)

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का देहान्त हुआ तो लोगों में बेहस हुई कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ब्र लहद वाली होनी चाहिए या लहद के बिना। अत: हज़रत अब्बास रज़ि ने हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि और हज़रत अबू तलहा रज़ि की तरफ़ एक एक आदमी भिजवाया और फ़ैसला हुआ कि उनमें से जो आदमी पहले आएगा जो वह बताएगा वैसी क़ब्र तैयार की जाएगी। हज़रत अबू उबैदह रज़ि मक्का वालों की तर्ज़ के अनुसार लहद के बिना क़ब्र तैयार

करते थे जबकि हज़रत अबू तलहा रज़ि मदीना वालों के तरीका के अनुसार लहद वाली क़ब्र तैयार करते थे। अत: हज़रत अबू तलहा रज़ि की तरफ़ भेजे हुए आदमी को हज़रत अबू तलहा रज़ि मिल गए जबकि हज़रत अबू उबैदह रज़ि की तरफ़ भेजे हुए आदमी को हज़रत अबू उबैदह रज़ि न मिले। अत: हज़रत अबू तलहा रज़ि आए और उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए लहद वाली क़ब्र तैय्यार की।

(सीरत इब्न हशाम भाग 2 पृष्ठ 663 हफ़रुल क़बर, प्रकाशन मुस्तुफ़ा बाबी अलहबली व औलादहो , मिस्र,1955 ई)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के देहान्त के फ़ौरन बाद ख़िलाफ़त के लिए अन्सार और मुहाजरीन के मध्य जो मतभेद हुआ उस के बारे में सही बुख़ारी में वर्णन है। यह पहले भी मैं एक सहाबी के वर्णन में बता चुका हूँ परन्तु यहां हज़रत अबू उबैदह रज़ि के वर्णन में भी वर्णन हो जाए तो बेहतर है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के देहान्त के बाद अन्सार हज़रत सअद बिन उबूउबैदह रज़ि के घर में जमा हुए और उन्होंने कहा कि एक अमीर हम में से और एक अमीर तुम अर्थात मुहाजरीन में से होगा। उनकी तरफ़ हज़रत अबू बकर रज़ि और हज़रत उमर रज़ि और हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि गए। हज़रत उमर रज़ि कुछ कहने लगे परन्तु हज़रत अबू बकर रज़ि ने उन्हें ख़ामोश करवा दिया। हज़रत उमर रज़ि बयान करते हैं कि मैं इस वक़्त सिर्फ इसलिए बोलना चाहता था क्योंकि मैं ने एक तक़रीर तैयार की थी जो मुझे बहुत पसन्द थी और मुझे डर था कि हज़रत अबू बकर रज़ि वैसी बात न कह सकेंगे परन्तु जब हज़रत अबू बकर रज़ि ने तक़रीर की तो ऐसी शानदार और बेहतरीन तक़रीर की जो समस्त तक़रीरों से बढ़कर थी। इसी तक़रीर में हज़रत अबू बकर रज़ि ने ए फ़रमाया कि हम अर्थात मुहाजिरीन अमीर हैं और तुम अर्थात अन्सार वज़ीर हो। इस पर हज़रत हुबब बिन मुनज़िर रज़ि ने कहा हरगिज़ नहीं। अल्लाह की कसम हम ऐसा हरगिज़ नहीं करेंगे। एक अमीर तुम में से होगा और एक अमीर हम में से होगा। हज़रत अबू बकर रज़ि ने फ़रमाया नहीं हम अमीर हैं और तुम वज़ीर हो क्योंकि क़ुरैश वंश की दृष्टि से तुम अरबों से उच्च और पुरातन हैं। अत: हज़रत अबू बकर रज़ि ने दो नाम पेश किए कि उमर रज़ि या अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि में से किसी एक की बैअत कर लो, ख़लीफ़ा बना लो। इस पर हज़रत उम्र रज़ि ने कहा नहीं हम तो आप रज़ि की बैअत करेंगे। अबूबकर रज़ि को कहा कि हम तो आप रज़ि की बैअत करेंगे क्योंकि आप रज़ि हमारे सरदार हैं और हम में से सबसे बेहतर हैं और हम में से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सबसे अधिक प्रिय हैं। यह कह कर हज़रत उमर रज़ि ने उनका हाथ पकड़ लिया और उनकी बैअत की और इसके बाद लोगों ने भी हज़रत अबूबकर रज़ि की बैअत की।

(सही बुख़ारी किताब फ़ज़ाइल अस्हाबुन्नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) बाब क़ौल उन्नबी (सल.) लौ कुन्त मुत्तख़ज़न ख़लीला, हदीस नम्बर 3668)

बहरहाल हज़रत अबूबकर रज़ि की नज़र में हज़रत अबू उबैदह रज़ि का यह स्थान था कि आप रज़ि का नाम ख़िलाफ़त के लिए चुना फ़रमाया। इसी तरह जिस तरह पहले हज़रत उम्र रज़ि के हवाले से भी वर्णन हो चुका है कि हज़रत उमर रज़ि ने यह फ़रमाया कि यदि अबू उबैदह रज़ि ज़िन्दा होते तो मैं उन्हें अगले ख़लीफ़ा के लिए नामज़द करता क्योंकि वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत के आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़रमान के अनुसार अमीन थे। जब ख़िलाफ़त के बारे में बहस हुई तो हज़रत अबू उबैदह ने अन्सार से मुख़ातब हो कर फ़रमाया कि यह अन्सार के गिरोह ! तुम तो वे लोग हो जिन्होंने सबसे पहले मदद की थी। कहीं ऐसा न हो कि अब तुम ही सबसे पहले मतभेद पैदा करने वाले हो जाओ।

(उद्धरित अज़ सैरुस्सहाब: लेखक शाह मुईनुद्दीन नदवी भाग 2 पृष्ठ 126-127 दारुल इशाअत उर्दू बाज़ार कराची पाकिस्तान)

हज़रत अबूबकर रज़ि अल्लाह अन्हो जब ख़िलाफ़त के पद पर आसीन हुए तो उन्होंने बैयतुल का काम हज़रत अबू उबैदह रज़ि के ज़िम्मे लगाया। 13 हिज्री में हज़रत अबू बकर रज़ि ने आप रज़ि को शाम की तरफ़ लश्कर का अमीर बना कर भेजा। हज़रत उम्र रज़ि ने ख़िलाफ़त के पद पर आसीन होने के बाद हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि को बतौर सिपहसालार स्थगित फ़र्मा कर हज़रत अबू उबैदह रज़ि को सिपहसालार निर्धारित फ़रमाया।

(सैरुल आलाम अन्नबला भाग 1 पृष्ठ 15 अबू उबैदह बिन अलजर्राह, प्रकाशन दारुल रिसाला अल्आलमिया दमिशक़ 2014 ई)

फ़तह शाम के बारे में वर्णन मिलता है कि13 हिज्री में रोमियों में कई तरफ से लश्कर के हमले किए गए। एक दस्ता के क़ाइद हज़रत यज़ीद बिन अबूसुफ़ियान थे। अबूसुफ़ियान के एक बेटे का नाम भी यज़ीद था,यह पहले फ़ौत हो गए थे, जो अरदन के पूर्व की तरफ़ से हमला कर रहे थे। दूसरे के हज़रत शुरहज़ील बिन हसना थे जो बलक़ाअ तरफ़ से आगे बढ़े। तीसरे के क़ाइद हज़रत अमरो बिन आस रज़ि थे जो फ़िलस्तीन की तरफ़ से शाम में दाख़िल हुए। चौथे दस्ते के क़ाइद हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि थे जो हम्स की तरफ़ बढ़े। हज़रत अबू बकर रज़ि ने फ़रमाया कि जब ये सब एक जगह इकट्ठे हो जाएं तो हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि सिपहसालार होंगे। हर लश्कर चार हज़ार पर आधारित था जबकि हज़रत अबू उबैदह रज़ि का लश्कर आठ हज़ार का था। जब लश्कर रवाना होने लगे तो हज़रत अबू बकर रज़ि ने क़ाइदीन लश्कर को देखो! न अपने क़ौम और साथियों पर तंगी वारिद करना न अपने साथियों पर। अपनी क़ौम और साथियों पर नाराज़गी का इज़हार न करना। उनसे मश्वरे करना और इन्साफ़ से काम लेना। ज़ुल्म तथा अत्याचार से दूर रहना कि ज़ालिम कभी सफलता नहीं पाता और कभी कामयाबी का मुँह नहीं देखता। और जब तुम्हारी दुश्मन से मुठभेड़ हो जाए तो दुश्मन को पीठ नहीं दिखाना कि अल्लाह तआला फ़रमाता है जो उस दिन पीठ फेरेगा उस पर ख़ुदा का ग़ज़ब टूटेगा और इसका ठिकाना जहन्नुम होगा सिवाए उस के कि जो लड़ाई के लिए जगह बदलता है या अपने साथियों से सम्पर्क स्थापित करना चाहता है। क़ुरआन करीम में सूरह अन्फ़ाल में आयत 17 में यह लिखा हुआ है। फिर फ़रमाया कि देखो !जब तुम दुश्मन पर ग़ल्बा पाओ तो किसी बच्चे, बूढ़े और औरत को क़तल न करना,किसी जानवर को हलाक न करना, वादा न तोड़ना, मुआहिदा कर के उसे ख़ुद न तोड़ना।

हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने सबसे पहले शाम के शहर मआब को फ़तह किया। वहां के निवासियों ने ज़िज़्या की शर्त पर सुलह कर ली। इसके बाद आप रज़ि ने जाबयिा का रुख किया। वहां पहुंचे तो देखा कि रोमियों का बड़ा लश्कर मुक़ाबले के लिए तैयार है। इस पर हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने हज़रत अबू बकर रज़ि की सेवा में और अधिक मदद के लिए निवेदन किया। हज़रत अबू बकर रज़ि ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि जो उस वक़्त इराक़ की मुहिम पर निर्धारित थे उनसे फ़रमाया कि आधा लश्कर हज़रत मसन्ना बिन हारिस रज़ि के नेतृत्व में छोड़कर तुम हज़रत अबू उबैदह रज़ि की मदद को पहुंच जाओ और हज़रत अबू बकर रज़ि ने हज़रत अबू उबैदह रज़ि को ख़त लिखा कि मैंने ख़ालिद को अमीर निर्धारित किया है और मैं ख़ूब जानता हूँ कि तुम इस से बेहतर और अफ़ज़ल हो। पूरे ख़त का निबन्ध यह है कि अल्लाह के बंदे अतीक़ पुत्र अबू क़ुहाफ़ा। अतीक़ हज़रत अबू बकर रज़ि का असल नाम था और अबू क़हाफ़ा उनके पिता का नाम था।

अल्लाह के बंदे अतीक़ पुत्र अबू क़हाफ़ा का ख़त अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि के नाम। तुझ पर ख़ुदा की सलामती हो। मैं ने शाम की फ़ौजों की कमान ख़ालिद के सपुर्द की है। आप उस का विरोध न करना और सुनना और इताअत करना। मैं ने तुम्हें उस पर वाली निर्धारित किया है। मैं जानता हूँ कि तुम उस से अफ़ज़ल हो परन्तु मेरा ख़्याल है कि उस में , ख़ालिद पुत्र वलीद रज़ि में , जंग के कौशल की योग्यता अर्थात जंगी मामलों की योग्यता तुम्हारी तुलना में बहुत अधिक है। अल्लाह मुझे और तुम्हें सही राह पर चले वाला बनाए रखे। हज़रत अबू बकर रज़ि ने ए लिखा। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि ने हीरा ,इराक़ में एक शहर का नाम है वहां से हज़रत अबू उबैदह रज़ि को ख़त लिखा कि अल्लाह की आप रज़ि पर सलामती हो। मुझे हज़रत अबू बकर रज़ि ने शाम की तरफ़ कूच करने का आदेश दिया है और फ़ौजों के नेतृत्व मेरे सपुर्द फ़रमाया है। ख़ुदा क़सम ! मैं ने इसका कभी मांग नहीं की और न मेरी इच्छा थी। आप रज़ि की वही हैसियत होगी जो पहले है। हम आप रज़ि की ना-फ़रमानी नहीं करेंगे और न आप रज़ि को नज़र अंदाज कर के कोई फ़ैसला करेंगे। आप रज़ि मुसलमानों के सरदार हैं। आप रज़ि की फ़ज़ीलत का हम इन्कार नहीं करते और न आप रज़ि के मश्वरे से मुस्तग़नी हो सकते हैं।

(उद्धरित रोशन सितारे लेखक ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब भाग 2 पृष्ठ 19 से 21) (अश्रा मुबश्शिरा लेखक बशीर साजिद पृष्ठ 804 अलबदर पब्लीकेशनज़ उर्दू बाज़ार लाहौर, 2000 ई)(सैरुस्सहाब: भाग 4 पृष्ठ 457-459 प्रकाशन दारुल इशाअत कराची)(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 110 ज़व्वार अकैडमी पब्लीकेशनज़ कराची 2003 ई)

ये देखें। यह है मोमिनाना शान। दोनों तरफ़ से किस तरह विनम्रता पूर्वक तौर पर इताअत का प्रकटन किया गया है।

जंग अजनादीन। जमादी उल-अव्वल 13 हिज्री में अजनादीन फ़लस्तीन के आसपास के इलाक़े में से एक बस्ती का नाम है। इस स्थान पर एक लाख रूमी

फ़ौज से मुसलमानों का यह मुक़ाबला हुआ। रिवायतों में आता है कि अजनादीन फ़ौज का सिपहसालार क़ैसर रुम हिरक़्ल का भाई थियोडोर (Theodore) था। 35 हज़ार के लगभग मुसलमानों ने एक लाख की फ़ौज को पराजय देकर अजनादीन को फ़तह कर लिया।

(उद्धरित अश्रा मुबश्शिरा लेखक बशीर साजिद पृष्ठ 805 अलबदर पब्लीकेशनज़ उर्दू बाज़ार लाहौर, 2000 ई)

(मुअज्जमुल बुलदान भाग 1 पृष्ठ 129 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)

अजनादीन की फ़तह के बाद मुसलमानों ने दमिशक़ का घेराव कर लिया और फिर उस का विस्तार इस तरह है। यह शाम की राजधानी है और दुनिया के पुरानतम शहरों में से एक है। दमिशक़ का मुसलमानों ने घेराव मुहर्रम 14 हिज्री में किया और यह घेराव छः माह तक जारी रहा। दूसरी पार्टी, जो विरोधी थे, दूसरी तरफ़ की फ़ौज वे क़िला बंद हो गए। अपने इलाक़े में थे इसलिए अपने क़िले बंद कर लिए। मुसलमानों के पांचों सालार अपनी फ़ौजों सहित इस शहर का घेराव किए हुए थे। हज़रत अबू उबैदह रज़ि अपनी फ़ौज के साथ पूर्वी दरवाज़े पर थे। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि उनके मुक़ाबला में पश्चिमी दरवाज़े पर थे और बाक़ी तीन सालार भी, कमांडर जो थे विभिन्न दरवाज़ों पर निर्धारित थे। रूमी बीच बीच में निकल कर जंग करते परन्तु फिर वापस चले जाते और क़िला बंद हो जाते थे। उन्हें उम्मीद थी कि क़ैसर रुम सहायता भेजेगा परन्तु इस्लामी फौज़ों की चौकसी ने उनकी उम्मीदें मिट्टी में मिला दी थीं। एक रात जबकि शहर में कोई जश्न हो रहा था और किला के पहरेदार भी इस जश्न की ख़ुशी में पहरेदारी से ग़ाफ़िल थे तो हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि अपने कुछ साथियों सहित शहर की किला की दीवार फलाँग कर शहर में दाख़िल हो गए और दरवाज़ा खोल दिया। इस तरह उनकी फ़ौज शहर में दाख़िल हो गई। यह देखकर शहर-वालों ने हज़रत अबू उबैदह रज़ि से सुलह कर ली जो कि शहर के दूसरी तरफ़ थे परन्तु हज़रत ख़ालिद रज़ि को यह ख़बर नहीं हुई और निरन्तर जंग कर रहे थे। हज़रत अबू उबैदह रज़ि के पास लोग गए और उनसे मांग की कि हमें ख़ालिद रज़ि से बचाईए। शहर के बीच में इन दोनों सरदारों का आमना सामना हुआ और फिर जब ख़ालिद बिन वलीद रज़ि और हज़रत अबू उबैदह रज़ि शहर के बीच में आ के शहर-वालों के साथ मिले तो फिर शहर-वालों के साथ सुलह कर ली गई क्योंकि मुआहिदा हज़रत अबू उबैदह रज़ि कर चुके थे।

(उद्धरित अश्रा मुबश्शिरा लेखक बशीर साजिद पृष्ठ 805-806 अलबदर पब्लीकेशनज़ उर्दू बाज़ार लाहौर, 2000 ई)

जंग फिहल। यह शाम का एक शहर है। दमिशक़ फ़तह करने के बाद मुसलमान आगे बढ़े तो मालूम हुआ कि रूमी बेसा नामक स्थान में जमा हो कर मुसलमानों पर हमला करने की तैयारी कर रहे हैं। मुसलमान उनके मुक़ाबला में फ़हल स्थान पर पड़ाव डालने लगे। रूमी फ़ौज के सिपहसालार ने सुलह की पेशकश के लिए अपने राजदूत को हज़रत अबू उबैदह रज़ि की तरफ़ भेजा। वह जब इस्लामी लश्कर में पहुंचा तो उसने देखा कि वहां एक ही तरह नीचा और ऊंचा, अफ़्सर तथा अधीन, सिपहसालार और सिपाही बैठे हैं और कोई भेदभाव और अन्तर दिखाई नहीं दिया। आख़िर उसने मजबूर हो कर किसी से पूछा कि आपका सिपहसालार कौन है। लोगों ने एक सीधे साधे व्यक्ति की तरफ़ इशारा किया जो ज़मीन पर बैठा हुआ था। राजदूत ने क़रीब जा कर कहा कि आप ही इस के सिपहसालार हैं? हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने कहा कि हाँ। राजदूत ने पेशकश की कि अपनी फ़ौज को यहां से वापस ले जाएं और इसके बदले में आपके हर सिपाही को प्रति व्यक्ति दो अशर्फ़ियां सोने की मिलेंगी। सिपहसालार को एक हज़ार दीनार मिलेंगे और तुम्हारे ख़लीफ़ा को दो हज़ार दीनार दिए जाऐंगे। हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने इन्कार कर दिया। उन्होंने कहा हम पैसे लेने नहीं आए। माल तथा दौलत के उद्देश्य से नहीं आए। हम अल्लाह के कलिमा को बुलन्द करने निकले हैं। सफ़ीर उनको धमकियां देता हुआ वहां से वापस चला गया। इसके यह तेवर देखकर हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने फ़ौज को तैयारी का हुक्म दिया और अगली सुबह दोनों फ़ौजों में जंग हुई। हज़रत अबू उबैदह रज़ि ख़ुद फ़ौज के दिल अर्थात मध्य में थे और बड़ी हिक्मत से फ़ौज को लड़ा रहे थे यहां तक कि मुसलमानों ने बावजूद कम संख्या होने के रोमियों को शिकस्त दे दी और इसका नतीजा यह हुआ कि अरदन का समस्त इलाक़ा मुसलमानों के पास आ गया

(उद्धरित अश्रा मुबश्शिरा लेखक बशीर साजिद पृष्ठ 807-808 अलबदर पब्लीकेशनज़ उर्दू बाज़ार लाहौर, 2000 ई)

(उद्धरित अज़ सैरुस्सहाब: अज़ शाह मुईन उद्दीन नदवी भाग 2 पृष्ठ 128 दारुल इशाअत उर्दू बाज़ार कराची पाकिस्तान)

फ़तह हिमस। फ़िहल की फ़तह के बाद हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने हिमस की तरफ़ पेशक़दमी की जो शाम का एक मशहूर शहर था और जंगी और स्यासी महत्व रखता था। रास्ते में बअल बक शहर,जो लबनान का एक पुराना शहर है, दमिशक़ से तीन रातों की दूरी पर है। वहां से गुज़र हुआ जो एक पुराना शहर था और यह बअल बत की उपासना का बहुत बड़ा मर्कज़ रह चुका था। वहां के निवासियों ने हज़रत अबू उबैदह रज़ि का मुक़ाबला करने की बजाय सुलह का निवेदन किया जो ज़िज्या की शर्त के साथ मन्ज़ूर कर ली गई। उनसे कोई लड़ाई, जंग नहीं हुई। और स्वीकार हो गया कि वे जिज़्या दें और बेशक अपने धर्म पर क़ायम रहें। हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने हम्मस का रुख किया और इसका घेराव कर लिया । हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि भी आप रज़ि के साथ थे। शहर-वालों को क़ैसर से फ़ौजी सहायता की आशा थी। इसलिए वह मुक़ाबला के लिए तैयार हो गए। परन्तु जब वे सहायता से निराश हो गए तो उन्होंने हथियार डाल दिए और सुलह का निवेदन किया जो मन्ज़ूर कर ली गई। सुलह के साथ उन्हें जान तथा माल की अमान दी गई और उनके इबादत ख़ाने और मकान सुरक्षित क़रार दिए गए। मकान भी सुरक्षित, इबादत ख़ाने भी महफ़ूज़ और जो अपने मज़हब पर क़ायम रहे उन पर ज़िज्या और ख़िराज लगाया गया। अर्थात अपने मज़हब पर बेशक क़ायम रहो परन्तु ज़िज्या और ख़राज देना पड़ेगा जो एक टैक्स है।

फ़तह लज़क़िय्या। इसके बाद इस्लामी लश्कर ने लज़क़िय्या जो शाम का एक शहर है और समुंद्र के तट पर स्थित है। हुम्मस के आसपास के इलाक़ों में इस को शुमार किया जाता है। बहरहाल उस का घेराव कर लिया। सुरक्षा के प्रबन्धों की दृष्टि से लज़क़िय्या बहुत मज़बूत था। शहर-वालों के पास खाने के भण्डार प्रचुरता के साथ मौजूद थे जिनकी वजह से उनको घेराव की कोई पर्वा नहीं थी। हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने इस को फ़तह करने की एक नई तदबीर निकाली। आप रज़ि ने एक रात मैदान में बहुत से गढ़े खुदवाए और उन्हें घास से ढक दिया और सुबह घेराव उठा कर हमस की तरफ़ रवाना हो गए। ज़ाहिर यह किया कि हम वापस जा रहे हैं। गढ़े खोदने के बाद घास से ढाँकने के बाद घेराव उठा लिया और सारी फ़ौज वापस हो गई। शहर-वालों ने और शहर में मौजूद फ़ौजों ने घेराव उठते देखा तो ख़ुश हुए और सन्तोष से शहर के दरवाज़े खोल दिए। दूसरी तरफ़ हज़रत अबू उबैदह रज़ि रातों रात अपनी फ़ौज सहित वापस आ गए। रात को ही वापस आ गए और इन ग़ार जैसे गढ़ों में छिप गए। जो ग़ारें थीं। tunnels बनाई थीं। या ट्रेंचज़ (Trenches)बनाई थीं उनमें छिप गए और सुबह जब शहर के दरवाज़े खुले तो आप रज़ि ने एक बार हमला कर दिया और शहर में दाख़िल हो कर शहर को फ़तह कर लिया।

(उद्धरित सैरुस्सहाब: लेखक शाह मुईनुद्दीन नदवी भाग 2 पृष्ठ 128 दारुल इशाअत उर्दू बाज़ार कराची पाकिस्तान)

(अश्रा मुबश्शिरा लेखक बशीर साजिद पृष्ठ 809 अलबदर पब्लीकेशनज़ उर्दू बाज़ार लाहौर, 2000 ई)

(मुअज्जमुल बुलदान भाग 5 पृष्ठ 6 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)

बाक़ी इंशा अल्लाह तआला बाद में वर्णन चलेगा, बयान करूँगा।

पाकिस्तान के अहमदियों के लिए भी आजकल बहुत दुआ करें। अल्लाह तआला उन्हें मौलवियों और हुकूमत के काम करने वालों की बुराई से सुरक्षित रखे। वहां फिर विरोध की तीव्र लहर आई हुई है। क़ानून की सुरक्षा न केवल यह कि इन्साफ़ को नहीं जानते बल्कि उस की धज्जियाँ उड़ा रहे हैं और जो मौलवी कहता है इसके पीछे चल रहे हैं। मेरा ख़्याल है अपनी जान बचाने के लिए कि शायद उनको इसी तरह स्यासी मज़बूती मिल जाए परन्तु यह उनकी भूल है। यह हमेशा याद रखें कि यही चीज़ उनकी तबाही का माध्यम बनेगी। हम तो पहले भी इन कष्टों से गुज़रते रहे हैं, अब भी इंशा अल्लाह तआला अल्लाह तआला की मदद से गुज़र जाऐंगे परन्तु उनकी ये हरकतें यदि ये उनसे न रुक तो उनकी तबाही यक़ीनी है। अत: अहमदी आजकल बहुत दुआएं करें कि अल्लाह तआला ये मुश्किलें दूर फ़रमाए। अल्लाह तआला से अपने सम्बन्ध में बढ़ें खासतौर पर पाकिस्तान में रहने वाले अहमदी, बाहर रहने वाले अहमदी भी जो पाकिस्तान से आए हुए हैं ताकि अल्लाह तआला की मदद और सहायता शीघ्र आए और उन मुश्किलों से वहां के रहने वाले अहमदी छुटकारा पा सकें।

(अलफ़ज़ल इंटरनेशनल 23 अक्तूबर 2020 ई पृष्ठ 5 से 9)

☆ ☆ ☆ ☆

..... पृष्ठ 2 का शेष

परन्तु इसके साथ साथ उसको घर भी देखना होगा। औरतों का घरों में रहने या घरों को सँभालने का कदापि यह अर्थ नहीं है कि उनको घर से बाहर निकलने की आज्ञा ही नहीं है। हमारी औरतों की एक संस्था है जो कि बहुत सक्रिय है। यदि आपने कभी हमारा जलसा देखा हो तो आपको पता चले कि औरतें अपने फंक्शनज़ ख़ुद आर्गेनाईज़ करती हैं और वे हमारी जमाअत में बहुत सक्रिय हैं। वे बाहर जा कर भी अपने फंक्शनज़ आयोजित करती हैं और उन का अपना अलग प्रबन्ध होता है। फिर औरतों की काफ़ी संख्या है जो कि डाक्टर हैं, टीचर हैं, आर्कीटेक्टस हैं जो बाहर जा कर काम करती हैं।

औरत पत्रकार ने पूछा कि फिर औरतों और मर्दों के मध्य separation क्यों रखी जाती है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: क्योंकि मैं यह मानता हूँ कि यदि औरतों को मर्दों के साया से अलग रखकर अवसर दिया जाए तो वे अधिक बेहतर रंग में काम करती हैं। जब वे मर्दों से अलग होती हैं तो वे अपने काम करने में और तरक़्क़ी करने में आज़ाद होती हैं। यदि आप एक बड़े वृक्ष के नीचे छोटा पौधा लगा दें तो वह सही तरह फल फूल नहीं सकता। इसलिए हम समझते हैं कि यदि औरतें मर्दों से अलग होकर काम करें तो वे अधिक बेहतर रंग में तरक़्क़ी कर सकती हैं। परन्तु इसके साथ साथ औरतों के पास भी वही अधिकार हैं जो मर्दों के पास हैं। औरतों के पास खुलअ का हक़ है, इस्लाम में औरतों को विरासत का हक़ प्राप्त है और कई दूसरे अधिकार भी प्राप्त हैं जो कि पश्चिम में कुछ दशकों पहले तक औरतों को प्राप्त ना थे। यदि आप लोगों के पास अब यह अधिकार हैं तो आप यह नहीं कह सकतीं कि आप औरतों के अधिकार की चैंपीयन हैं बल्कि इस्लाम औरतों के अधिकार का देने वाला है।

औरत पत्रकार ने कहा कि परन्तु औरतों को विरासत में मर्दों का आधा हिस्सा मिलता है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया। इसके पीछे भी एक दूरदर्शिता है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: यदि आप इस तरह सवाल पर सवाल करती रहेंगी तो मेरा सारा समय ले लेंगी और मुझे पहले ही देरी हो रही है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: बहरहाल जहां तक औरतों को मर्दों की तुलना में आधा हिस्सा मिलने का सम्बन्ध है तो जैसा कि मैंने आपको पहले भी बताया है कि रोटी कमाने की ज़िम्मेदारी मर्दों पर है, मर्द ने कमाना है और वही घरेलू खर्चों का ज़िम्मेदार है। इसलिए यदि औरत खर्चों की ज़िम्मेदार नहीं है तो फिर उसको विरासत में जो कुछ भी मिल रहा है वह उसका अपना है। इसके लिए वह पैसे घरेलू खर्चों पर या अपने पति पर या अपने बच्चों पर ख़र्च करना फ़र्ज़ नहीं है। क्योंकि बच्चों पर या घरेलू खर्चों पर ख़र्च करने की ज़िम्मेदारी मर्द पर है। अत: औरत को जो कुछ भी विरासत में मिल रहा है वह विशेष रूप से उसी का है परन्तु जो मर्द को मिल रहा है वह उसने अपनी बीवी पर भी ख़र्च करना है और अपने बच्चों पर भी ख़र्च करना है। तो उसके पीछे यही बुनियादी तर्क है।

औरत पत्रकार ने जवाब पर हुज़ूर अनवर का शुक्रिया अदा किया और आख़िरी सवाल करते हुए निवेदन किया कि आपसे पहले ख़लीफ़ा ने कहा था कि वह जर्मनी में सौ मस्जिदें बनाने करना चाहते हैं। क्या आप भी यही कहते हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: वह तो जर्मनी जमाअत को एक आरम्भिक टार्गेट दिया गया था। इसका यह अर्थ नहीं कि सौ मस्जिदें बनाने करने के बाद हम रुक जाऐंगे। बल्कि हम यहां जर्मनी में और अधिक मस्जिदें बनाते रहेंगे। परन्तु अभी तक हमने सौ मस्जिदें वाला लक्ष्य पूरा नहीं किया इसलिए फ़िलहाल हमारी ध्यान सौ मस्जिदों की तरफ़ ही है। जब यह लक्ष्य पूर्ण हो जाएगा तो फिर मैं या फिर जो भी मेरे बाद में आने वाला होगा वह नया लक्ष्य दे देगा।

इंटरव्यू के आख़िर में औरत पत्रकार ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का समय देने पर बहुत शुक्रिया अदा किया। यह इन्ट्रवियू 11 बजे तक जारी रहा।

एंबेसडर की हुज़ूर से मुलाक़ात

इसके बाद एंबेसडर Volker Berresheim ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का। महोदय मिनिस्ट्री आफ़ फ़ौरन अफ़ईरज़ में डायरेक्टर धर्म और पोलीटिक्स डिपार्टमैंट में हैं। महोदय ने सबसे पहले हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में पिछले रात आयोजित होने वाली शानदार आयोजन पर मुबारकबाद प्रस्तुत की। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि समाज के विभिन्न वर्गों के लोग वहां आए थे।

डाक्टर Berresheim ने कहा कि आजकल दुनिया को काफ़ी पेचीदा और विभिन्न किस्म के ख़तरों और चैलेंजिज़ का सामना है परन्तु मुझे नहीं लगता कि तीसरे विश्वयुद्ध जंग का ख़तरा भी सम्मुख है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि वास्तव में दुनिया को बहुत से ख़तरों का सामना है परन्तु आप तीसरे विश्वयुद्ध के ख़तरा को झुठला नहीं सकते और न ही झुठलाया जाना चाहिए।

महोदय ने कहा कि मुझे लगता है कि विभिन्न सोसाइटियों की अंदरूनी समस्याएं अधिक हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि सोसाइटीज़ के अंदर बेचैनियां हैं परन्तु यह बेचैनीयां अब देश की सरहदें भी पार कर रही हैं इसलिए विभिन्न देशों के मध्य भी मतभेद जन्म ले रहे हैं।

डाक्टर Berresheim ने कहा कि परन्तु इन समस्याओं का हल हमें अभी तक नहीं मिला। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि राष्ट्र संघ और इस जैसी अन्य संस्थाऐं इन समस्याओं का हल बन सकती हैं परन्तु राष्ट्र संघ अपना काम सही तरह नहीं करती।

यूरोपियन पार्लियामेंट के आडीटोरीयम में मैंने जो तक़रीर की थी इसमें मैंने यूरोपियन यूनीयन के हवाला से बात की थी और कहा था कि यूरोपियन देशों का यह इत्तिहाद ज़रूर स्थापित रहना चाहिए। परन्तु आज हमें यह इत्तिहाद भी बिघरता होता नज़र आ रहा है। बरीगज़ट तो केवल आरम्भ है। इसके बाद संभव है इटली, स्पेन और अन्य देशों भी यही करें।

इस पर डाक्टर Berresheim ने कहा कि इस बिघराव या मतभेद के पीछे नियमित पैसा लगा हुआ है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि बिल्कुल ठीक बात है। विभिन्न किस्म के इत्तिहाद और ब्लॉक्स बनते हुए नज़र आ रहे हैं

महोदय ने कहा कि लबनान की रिपोर्टों के अनुसार वहां जो बातचीत हुई है उसे विभिन्न धर्मों ने सराहा है और इसके सकारात्मक प्रभाव सामने आए हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि इस्लामी देशों में आप देख सकते हैं कि बहुत से मुसलमान फ़िर्क़ों के आपस में एक दूसरे के साथ मतभेद हैं। कोई भी साझा प्लेटफार्म नहीं है। हर ग्रुप का अपना ऐजंडा है। पाकिस्तान में आपको इस चीज़ की चरम नज़र आएगी

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हुकूमतों को चाहिए कि वे इस तरफ़ विशेष ध्यान दें। धर्म और हुकूमत को अलग करना बहुत ज़रूरी है। वर्ना अमन स्थापित नहीं हो सकता। परन्तु सवाल यह है कि धर्म को देश के मामलों में दख़ल अंदाज़ी करने से रोकेगा कौन।

महोदय ने कहा कि Lindau में एक धार्मिक कान्फ्रैंस आयोजित हुई है जिसमें 900 से अधिक प्रतिनिधि शामिल हुए थे और इसमें अहमदिया मुस्लिम जमाअत की भी प्रतिनिधित्व हुआ है। उन्होंने भी ऐक्शन प्लान बनाया है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया देखते हैं किस सीमा तक इस प्लान पर अनुकरण होता है

महोदय ने कहा कि जब धार्मिक जमाअतें अकेली खड़ी होती हैं तो अपनी रिवायतों और संस्कृतियों को मजबूरियों में जकड़ी होती हैं और उनकी आवाज़ें नहीं सुनी जातीं। इस से कोई विशेष लाभ नहीं होता परन्तु आप जब विभिन्न जमाअतों को इकट्ठा करके किसी एक बात पर सहमत करके आवाज़ उठाएं तो आपकी आवाज़ अधिक ऊंची होती है और हुकूमतें उसको सुनती भी हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया आजकल मसला यह है कि धार्मिक रहनुमा धार्मिक होने की तुलना में अधिक राजनीतिक होते हैं। मेरी दुआ है कि आपकी कोशिशों के अच्छे परिणाम निकलें परन्तु साथ-साथ आपको यह भी बता दूं कि आप अधिक ख़ुश होने का शिकार न हों।

मुलाक़ात का यह प्रोग्राम 11 बजकर 25 मिनट तक जारी रहा। अन्त में महोदय ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया

(शेष.....)

पृष्ठ 1 का शेष

नहीं करते? मैं इसके जवाब में यही कहूँगा कि असल बात यह है कि इन्सान फ़ित्रतन किसी बात की पैरवी नहीं करता जब तक कि इस में कमाल की महक न हो और यही एक भेद है जो अल्लाह तआला हमेशा अंबिया अलैहिमुस्सलाम को मबऊस करता रहा है और ख़ातमन्नबय्यीन के बाद मुजद्दिदीन के सिल्सिला को जारी रखा है,क्योंकि ये लोग अपने व्यावहारिक आचरण के साथ एक आकर्षण और प्रभाव की शक्ति रखते हैं और नेकियों का कमाल उनके वजूद में नज़र आता है इस लिए कि इन्सान अपनी फितरत में कमाल का अनुकरण करना चाहता है। अगर इन्सान की फ़ितरत में यह शक्ति न होती तो अंबिया अलैहिमुस्सालम के सिलसिला की भी ज़रूरत न रहती।

मामूरीन (अल्लाह की तरफ से भेजे गए लोगों) के विरोध का कारण

परन्तु यह बात कि अंबिया अलैहिमुस्सालम और ख़ुदा तआला के मामूरों का विरोध क्यों किया जाता है और उनकी शिक्षा की ओर कम ध्यान क्यों किया जाता है? इस का कारण ज़माना की वह हालत होती है जो इन पवित्र वजूदों के प्रादुर्भाव का कारण होता है। ज़माना में दुराचार तथा कदाचार का एक दरिया जारी होता है और हर प्रकार के बुरे काम और बुराईयां ख़ुदा तआला से दूरी और हराम इस नेक उत्तम माद्दा को अपने नीचे दबा लेता है। क्यूंकि बुराइयों के कमाल का ज़हूर हुआ होता है इस लिए तबीयत का यह माद्दा कि वह हर कमाल का अनुकरण करना चाहता है। इस तरफ़ रुजू कर गया होता है और यही वह भेद होता है कि आरम्भ में अंबिया अलैहिमुस्सालम और मामूरों का विरोध और उनकी शिक्षा से लापरवाही प्रकट की जाती है,आख़िर एक वक़्त आ जाता है कि इस नेकी के प्रतिरूप और कमाल की तरफ़ ध्यान हो जाता है और यही कारण है कि ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि

وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ (अज़्ज़ुख़रफ़: 36)

ज़ाहरी स्वच्छता का प्रभाव

अत: इन्सानी फ़ितरत में यह बात रखी गई है कि वह प्रत्येक कमाल का अनुकरण करना चाहती है। देख लो! अंग्रेज़ों के नए आविष्कार सोई, चाक़ू इत्यादि तक का कितना सम्मान किया जाता है और देसी चीज़ों के मुक़ाबला में उनको कितना पसन्द किया जाता है; हालाँकि उनमें कई चीज़ें नहीं बल्कि अक्सर धोखी की हुई होती हैं,परन्तु ज़ाहिरी चमक दमक ऐसी होती है कि आँखों को मांद कर देती हैं और इस की रोशनी एक कशिश के साथ अपनी तरफ़ ध्यान आकर्षित कर लेती है। तुम नहीं देखते यह झूठे ज़ेवर जो पानी चढ़ाए हुए बकते हैं उन का व्यापार कैसी तेज़ी के साथ बढ़ रही है। असली चीज़ों के मुक़ाबला में इन को रखकर देखोगे तो मालूम होगा कि असली,नक़ली मालूम होता है और नक़ली असली। इन चीज़ों की ज़ाहिरी चमक दमक में एक रोशनी है जो हमारे देसी कारीगर उसको दिखा नहीं सकते, इस लिए बावजूद के लोग साफ़ जानते हैं कि यह चीज़ें पानी चढ़ाई हैं। परन्तु इस धोखा की कुछ भी परवाह नहीं करते। हर एक चीज़ उनकी देखो। देसी कपड़े, देसी जूते, जैंटलमैन शिक्षा प्राप्त उनसे विमुखता प्रकट करते हैं। क्यों? सिर्फ इस लिए कि अंग्रेज़ी चीज़ों में एक विशेष किस्म की सफाई और उम्दगी होती है। ये लोग चमड़े को ऐसा कमाते हैं कि इस में नरमी और चमक पैदा कर लेते हैं। यह क्या हर एक छोटी सी चीज़ को देखो एक तागे को ही देखो ,कैसा ख़ूबसूरत होता है। अत: हर एक देसी चीज़ को अपने मुक़ाबला में निकम्मा कर दिया है,बल्कि मैंने तो सुना है कि कई देसी रईस देसी चीज़ों से यहां तक विमुख हैं कि उनके कपड़े भी पैरिस से धुल कर आते हैं ओर पीने का पानी भी विलायत से मंगवाते हैं।

इस ख़रीदारी का भेद किया है। उन्होंने ज़ाहरी ख़ूबसूरती और चमक और अच्छा दिखना रख दिया है। इस लिए लोग इधर झुक गए हैं। जब यह अवस्था है कि दयानतदार और भी हैं और कुफ़्फ़ार का भी गिरोह है परन्तु कुफ़्फ़ार की तरफ़ झुकाव उन की सफाई और चमक की कारण से है। यही हाल अख़लाक़ और कर्मों का है। अत: जब तक उनकी दमक चमक यहां तक न पहुंचाई जाए, मानव जाति पर प्रभाव नहीं पड़ सकता। जो लोग ख़ुद कमज़ोर होते हैं,वे दूसरे कमज़ोरों को समाहित नहीं कर सकते।

क़ुरआन करीम में सृष्टि की क़सम की वास्तविकता

ख़ुदा तआला फ़रमाता है

وَالْعَصْرِ ۙ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِیْ خُسْرٍ اِلَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ تَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ (अल- असर 2 से 4)

क़सम है उस ज़माना की अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना की। आजकल हमारे ज़माना के अज्ञान विरोधी यह आरोप लगाते हैं कि क़ुरआन शरीफ़ में सृष्टि की क़समें क्यों खाई गई हैं;हालाँकि दूसरों को मना किया है। और कहीं इंजीर की क़सम है,कहीं दिन और रात की और कहीं ज़मीन की और कहीं नफ़्स की? इस प्रकार के आरोपों का बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। यह बात याद रखनी चाहिए कि समस्त क़ुरआन शरीफ़ में यह एक आम सुन्नत और इलाही आदत है कि वह कई स्पष्ट बातों की स्वीकारोक्ति तथा वास्तविकता वर्णन करने के लिए किसी ऐसी बातों का हवाला देता है जो अपनी विशेषताओं का आम तौर पर स्पष्ट और खुला खुला और सुदृढ़ सबूत रखते हैं। अत: उनकी क़सम खाना उनको दलील और तुलना के रूप में पेश करना होता है।

क्या हिन्दुस्तान दारुल हर्ब (जंग का घर) है

हम इस आरोप का स्पष्ट उत्तर देने से पूर्व एक ज़रूरी बात और वर्णन करना चाहते हैं। हर एक मुसलमान को याद रहे कि हम गर्वनमेंट की दृष्टि से हिन्दुस्तान को दारुल हर्ब नहीं कहते और यही हमारा मज़हब ही ;यद्यपि इस मसला में विरोधी उल्मा ने हमसे सख़्त मतभेद किया है और अपनी तरफ़ से कोई तरीका हमको कष्ट पहुंचाने का उन्होंने बाक़ी नहीं रखा परन्तु हम इन अस्थायी कष्टों और आनी तकलीफ पहुंचाने के ख़ौफ़ से हक़ को कैसे छोड़ सकते हैं। हम इस बात पर ईमान रखते हैं कि हुकूमत की दृष्टि से हिन्दुस्तान हरगिज़ हरगिज़ दारुल हर्ब नहीं है। हमारा मुक़द्दमा ही देख लो। अगर यही मुक़द्दमा सिखों के हुकूमत के युग में होता और दूसरी तरफ़ उनका कोई गुरु या ब्रहमन होता तो बिना किसी किस्म की तहक़ीक़ तथा पूछताछ के हमको फांसी दे देना कोई बड़ी बात न थी परन्तु अंग्रेज़ों की सल्तनत और हुकूमत ही की यह विशेषता है कि मुक़ाबला में एक डाक्टर और फिर मशहूर पादरी है परन्तु तहक़ीक़ात और अदालत की कार्रवाई में कोई सख़्ती का बर्ताव नहीं किया जाता। कैप्टन डगलस ने इस बात की ज़रा भी पर्वा नहीं की कि पादरी साहिब का ज़ाती सम्मान या उनके अपने ओहदा और दर्जा पर ध्यान दिया जाए ;अत: उन्होंने लेमारचंड साहिब से जो पुलिस गुरदासपुर के उच्च अफ़्सर हैं,यही कहा कि हमारा दिल तसल्ली नहीं पाता। फिर अब्दुल हमीद से पूछा जाए। अन्त में इन्साफ़ की दृष्टि से हमको उसने बरी ठहराया। फिर यह लोग हम को धर्म के पालन से नहीं रोकते,बल्कि बहुत सी बरकतें अपने साथ लेकर आए,जिसकी कारण से हमको अपने मज़हब के प्रचार प्रसार के लिए उत्तम अवसर मौक़ा मिला और इस किस्म का अमन और आराम नसीब हुआ कि पहली हुकूमतों में उनकी तुलना नहीं मिलती। फिर यह स्पष्ट अत्याचार और इस्लामी शिक्षा और आचरण के विरुद्ध है कि हम उनके शुक्र गुज़ार न हों। याद रखो! इन्सान जो अपने जैसे इन्सान की नेकियों का शुक्र गुज़ार नहीं होता,वह ख़ुदा तआला का भी शुक्रगुज़ार नहीं हो सकता; हालाँकि वह उसे देखता है। तो सब से ग़ैब हस्ती के इनामों का शुक्र करने वाले कैसे होगा,जिसको वह देखता भी नहीं, इसलिए केवल हुकूमत के दृष्टि से हम इस को दारुल हर्ब नहीं कहते।

हाँ! हमारे निकट हिन्दुस्तान क़लम की दृष्टि से दारुल हर्ब है। पादरी लोगों ने इस्लाम के विरुद्ध एक ख़तरनाक जंग शुरू की हुई है। इस मैदाने जंग में वे क़लम के भाले लेकर निकले हैं न तलवार तथा तोप लेकर। इसलिए इस मैदान में हमको जो हथियार ले कर निकलना चाहिए वह क़लम और केवल क़लम है। हमारे निकट हर एक मुसलमान का फ़र्ज़ है कि वह इस जंग में सम्मिलित हो जाए। अल्लाह और इसके प्यारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर वे दिल छेदने वाले हमले

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

किए जाते हैं कि हमारा तो जिगर फट जाता और दिल काँप उठता है। क्या उम्माहातुल मोमिनीन या दरबार मुस्तफ़ाई के इसरार जैसी गंदी किताब देखकर हम आराम कर सकते हैं,जिसका नाम ही इस तरीका पर रखा गया है। जैसे नापाक नाविलों के नाम होते हैं। आश्चर्य की बात है कि दरबार लन्दन के इसरार जैसी किताबें तो गर्वनमेंट के अपने इल्म में भी इस योग्य हों कि इस का प्रकाशन बन्द किया जाए परन्तु आठ करोड़ मुसलमानों का दिल छेदने वाली ने वाली किताब को न रोका जाए। हम ख़ुद गर्वनमेंट से इस किस्म का निवेदन करना हरगिज़ हरगिज़ नहीं चाहते बल्कि उसको बहुत ही अनुचित ख़्याल करते हैं। जैसा कि हमने अपने मेमोरियल के माध्यम से स्पष्ट कर दिया,परन्तु यह बात हमने केवल इस आधार पर कही है कि ख़ुद गर्वनमेंट का अपना फ़र्ज़ है कि वह ऐसी तहरीरों का ध्यान रखे। बहरहाल गर्वनमेंट ने आम आज़ादी दे रखी है कि अगर ईसाई एक किताब इस्लाम पर एतराज़ करने के उद्देश्य से लिखते हैं तो मुसलमानों को आज़ादी के साथ उसका उत्तर लिखने और ईसाई मज़हब के रद्द में किताबें लिखने का अधिकार है।

इस्लामी ग़ैरत का तक़ाज़ा

मैं क़सम खा कर कहता हूँ कि जब कोई ऐसी किताब पर नज़र पड़ती है तो दुनिया और इस के वैभव एक मक्खी के बराबर नज़र नहीं आती। मैं पूछता कि जिस को वक़्त पर जोश नहीं आता क्या वह मुसलमान ठहर सकता है। किसी के बाप को बुरा-भला कहा जाए तो वह मरने मारने को तैयार हो जाता है परन्तु अगर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गालियां दी जाएं तो इस की जोश की रग में हरकत भी न आए और परवाह भी न करें। यह क्या ईमान है? फिर किस मुँह से मर कर ख़ुदा के पास जाऐंगे। अगर मुसलमानों का नमूना देखना चाहो तो सहाबा किराम की जमाअत को देखो। जिन्होंने अपने जान तथा माल के किसी किस्म के नुक़्सान की परवाह नहीं की। अल्लाह और इसके रसूल की प्रसन्नता को प्रथम कर लिया। ख़ुदा तआला की प्रसन्नता पर राज़ी हो जाना ही एक कर्म था जो सारा क़ुरआन शरीफ़ उनकी प्रशंसा से भरा हुआ है और रज़ि अल्लाह अन्हुम का तमग़ा उनको मिल गया। अत: जब तक तुम अपने अन्दर वह जोश और इस्लाम के के लिए ग़ैरत महसूस न कर लो। हरगिज़ अपने आपको सम्पूर्ण न समझो।

हमारी जमाअत याद रखे कि हम हिन्दुस्तान को हुकूमत की दृष्टि से हरगिज़ हरगिज़ दारुअल हर्ब क़रार नहीं देते बल्कि इस अमन और बरकतों के कारण से जो इस हुकूमत में हमको मिले हैं और इस आज़ादी को जो अपने मज़हब के काम करने और इस के प्रचार प्रसार के लिए गर्वनमेंट ने हमको दे रखी है। हमारा दिल इतर के शीशा की तरह वफ़ादारी और शुक्रगुज़ारी के जोश से भरा हुआ है,परन्तु पादरियों के कारण से हम इस को दारुल हर्ब क़रार देते हैं। पादरियों ने 6 करोड़ के लगभग किताबें इस्लाम के विरुद्ध प्रकाशित की हैं। मेरे निकट वे लोग नहीं हैं जो इन हमलों को देखें और सुनें और अपने ही विचारों में पड़े रहें। इस वक़्त जो कुछ किसी से संभव हो वह इस्लाम के समर्थन के लिए करे और इस क़लमी जंग में अपनी वफ़ादारी दिखाए,जबकि ख़ुद आदिल गर्वनमेंट ने हमको मना नहीं किया है कि हम अपने मज़हब के समर्थन और दूसरी क़ौमों के आरोपों के खण्डन में पुस्तकें प्रकाशित करें,बल्कि प्रैस,डाकखाने और प्रकाशन के दूसरे माध्यमों से मदद दी है, तो ऐसे वक़्त में ख़ामोश रहना सख़्त गुनाह है। हाँ ज़रूरत है इस बात की है कि जो बात प्रस्तुत की जाए,वह अक्ल वाली हो। इस का उद्देश्य दिल दुखाना न हो। जो इस्लाम के लिए खुला दिल और रोने वाली आंख नहीं रखता वह याद रखे कि ख़ुदा तआला ऐसे इन्सान का ज़िम्मादार नहीं होता। इस को सोचना चाहिए कि जितने विचार आपने सफलता के आते हैं और जितनी चेष्टाएं अपने सांसारिक लक्ष्यों के लिए करता है। इसी तड़प और जलन और दर्दे दल के साथ कभी यह विचार भी आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो वसल्लम की पाक ज़ात पर हमले हो रहे हैं,मैं उनके प्रतिरक्षा की भी कोशिश करूँ? और अगर कुछ और नहीं हो सकता तो कम से कम दर्द भरे दिल के साथ ख़ुदा तआला के हुज़ूर दुआ करूँ? अगर इस किस्म की जलन और दर्द दिल में हो तो संभव नहीं कि सच्ची मुहब्बत के निशान प्रकट न हों। अगर टूटी हांडी भी ख़रीदी जाए तो इस पर भी दुख होता है यहां तक कि एक सूई के गुम हो जाने पर भी अफ़सोस होता है। फिर यह कैसा ईमान और इस्लाम है कि इस ख़ौफ़नाक ज़माना में कि इस्लाम पर हमलों की बोछाड़ हो रही है। अमन और आराम के साथ ख़्वाबों में सो रहे हैं। क्या तुम नहीं देखते कि साप्ताहिक और मासिक अख़बारों और रिसालों के अतिरिक्त कितने दो पृष्ठ के इश्तिहार और छोटे छोटे रिसाले बांटे जाते हैं जिनकी संख्या पच्चास पच्चास हज़ार और कई बार लाखों तक होती है? और कई कई बार उनको प्रकाशित करने में करोड़ों रुपए पानी की तरह बहा दिया जाता है।

मसीहीयत इस्लाम के ख़िलाफ़ क्यों है

यह ख़ूब याद रखो कि पादरीयों के ज़हन और कल्पना में हिंदू कुछ चीज़ नहीं हैं और न दूसरे धर्म इत्यादि की उनको कुछ परवाह है; अत: कभी नहीं सुना होगा कि जितनी किताबें इस्लाम के खण्डन में यह लोग प्रकाशित करते हैं इसके मुक़ाबला में आधी भी हिंदू मज़हब के ख़िलाफ़ लिखते हूँ। ये लोग दूसरे धर्मों से कुछ उद्देश्य नहीं रखते हैं,इसलिए कि उनमें बजाय ख़ुद कोई सच्चाई और सत्यता की रूह नहीं है। वह ईसवीयत की तरह ख़ुद मुर्दा धर्म हैं,परन्तु इस्लाम जो एक ज़िन्दा मज़हब है जो हय्यो क़य्यूम ख़ुदा की तरफ़ से है इसके ख़िलाफ़ ये सिर तोड़ कोशिश करके इस को भी मुर्दा मिल्लत बनाना चाहते हैं। अत: मैंने उनके एतराज़ों को एक समय गिना था,उनकी संख्या तीन हज़ार तक पहुंच चुकी है और अब तो इस में और भी वृद्धि हुई होगी।

याद रखो झूठा इन्सान शंका में डालता है। चूँकि उन में सच्चाई,पवित्रता,सत्यता नहीं होती, इसलिए जो चाहते हैं करते हैं। अमृतसरी अफ़ग़ानों का पक्का विश्वास है कि ये लोग नमाज़ छोड़ने वाले हैं और शराब पीते हैं। जब दूसरों के सामने वे इस प्रकार के के एतराज़ करते हैं तो वे समझते हैं कि यह बुज़ुर्गों की सन्तान हैं,क्या झूट बोलेंगे? इससे वे शंका में पड़ते हैं और स्वीकार कर लेते हैं कि हां सच यही है। इसी तरह ये लोग उपद्रव करते हैं। अत: एक तो पादरी हैं जो खुले तौर पर इस्लाम के विरुद्ध किताबें लिखते और प्रकाशित करते हैं। दूसरे अंग्रेज़ी शिक्षा के तरीक़े और किताबों में भी छुपे हुए पर ज़हरीला माद्दा रखा हुआ है। फ़लसफ़ी अपने अन्दाज़ पर और मुख़र्ब अपने रंग में घटनाओं को बरी सूरत में पेश करके इस्लाम पर हमला करते हैं। सारांक्ष यह है कि इस वक़्त दो ही किस्म के हमले होते हैं एक पादरियों के और दूसरे फ़लसफ़ियों के। अत: क़ुरआन करीम में सृष्टि की क़सम की फ़लासफ़ी

मैं फिर मूल बात की तरफ़ लौट कर कहता हूँ कि कुरआन शरीफ़ की कस्मों पर जो एतराज़ किया जाता है वह भी इसी किस्म का है। बड़े ध्यान और चिन्तन के बाद यह रहस्य हम पर खुला है कि क़ुरआन शरीफ़ के जिस-जिस स्थान पर अल्प ज्ञानियों ने एतराज़ किए हैं। उसी स्थान पर उच्च स्तर की सच्चाइयों और आध्यात्म ज्ञान का एक भण्डार मौजूदा है। जिस पर उनको इस कारण से सूचना नहीं मिली कि वे सच्चाई के साथ शत्रुता रखते हैं और क़ुरआन शरीफ़ को केवल इसलिए पढ़ते हैं कि इस पर आलोचना और आपत्ति करें। याद रखो क़ुरआन शरीफ़ के दो हिस्से हैं बल्कि तीन। एक तो वह हिस्सा है जिसको कम दर्जा के लोग भी जो अनपढ़ होते हैं समझ सकते हैं ओर दूसरा वह हिस्सा है जो मध्यम दर्जा के लोगों पर खुलता है। यद्यपि वे पूरे तौर पर अनपढ़ नहीं होते परन्तु बहुत बड़े ज्ञान का सामर्थ्य भी नहीं रखते और तीसरा हिस्सा उन लोगों के लिए है जो उच्च दर्जा के ज्ञानों से समन्वित हैं और फिलासफर कहलाते हैं। यह क़ुरआन शरीफ़ ही का खासा है कि वे तीनों किस्म के आदमियों को एक जैसी शिक्षा देता है। एक ही बात है जो अनपढ़ और औसत दर्जा के आदमी और उच्च दर्जा के फिलासफर को शिक्षा दी जाती है।

यह क़ुरआन शरीफ़ ही का गर्व है कि प्रत्येक वर्ग अपने सामर्थ्य और दर्जा के अनुसार लाभान्वित होता है। अत: यह जो क़ुरआन शरीफ़ की क़सम पर एतराज़

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण के उदाहरण प्रस्तुत करो यहां तक कि सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्ररी जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 5 November 2020 Issue No.45

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Mobile : +91-94170-20616
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

किया जाता है,इस का उत्तर यह है कि क़सम एक ऐसी चीज़ है जिसको एक गवाह के न होने के कारण से दूसरा गवाह क़रार दिया जाता है। क़ानून की दृष्टि ,शरीयत,आप प्रचलन की दृष्टि से यह आम प्रमाणित बात है कि जब गवाह न हो और मौजूदा न हो तो सिर्फ़ कस्म पर भरोसा किया जाता है और वह क़स्म गवाही के क़ाइम मुक़ाम होती है। इसी तरह पर अल्लाह तआला की सुन्नत क़ुरआन करीम में इस तरह पर जारी है कि नज़रियात (मूल बातों) को प्रमाणित करने के लिए बदीहात (स्पष्ट बातों) को बतौर गवाह पेश करता है ताकि नज़री बातें प्रमाणित हों।

यह याद रखना चाहिए कि क़ुरआन शरीफ़ में यह तरीक़ा अल्लाह तआला ने रखा है कि नज़री बातों को प्रमाणित करने के लिए के लिए बदीही बातों को गवाह के रूप में पेश करता है और यह पेश करना कस्मों के रूप में है। इस बात को भी हरगिज़ भूलना न चाहिए कि प्रताप वाले अल्लाह की कस्मों को इन्सानी कस्मों जैसा समझना क़यास मअल फारिक़ (एक जैसा समझना) है। अल्लाह तआला ने जो इन्सान को अल्लाह के अतिरिक्त की क़सम खाने से मना किया तो इस का कारण यह है कि इन्सान जब क़सम खाता है तो उसका उद्देश्य यह होता है कि जिस चीज़ की क़सम खाई है उस को एक ऐसे गवाह का प्रतिनिधि ठहराए कि जो अपने ज़ाती इल्म से इसके ब्यान की सत्यता या इन्कार कर सकता है, क्योंकि अगर सोच कर देखा जाए तो क़सम का मूल अभिप्राय जैसा कि हमने अभी ब्यान किया था गवाही ही होता है। जब इन्सान मामूली गवाहों के पेश करने से असमर्थ हो जाता है तो फिर क़सम का मुहताज होता है,ताकि इससे वह लाभ उठाए जो एक देखने वाले गवाह की गवाही से उठाना चाहता है,परन्तु ऐसा मानना करना या आस्था रखना कि केवल ख़ुदा तआला के कोई और भी हाज़िर है और सत्यापन या इन्कार या सज़ा देने या किसी और बार पर सामर्थवान है, स्पष्ट कुफ़्र की बात है। इसलिए अल्लाह तआला ने अपनी समस्त पुस्तकों में इन्सानों को यही हिदायत फ़रमाई है कि अल्लाह के अतिरिक्त की हरगिज़ क़सम ना खाए।

अब इस बयान से साफ़ मालूम हो गया कि अल्लाह तआला का क़सम खाना कोई दूसरा रंग और शान रखता है और उद्देश्य इससे यही है कि ताकि प्रकृति की स्पष्ट बातों को शरीयत के रहस्य वाली बातों के हल करने के लिए गवाह के रूप में पेश करे और चूँकि इस मुद्दा को क़सम से एक तुलना थी और वह यह कि जैसा एक क़सम खाने वाला जब जैसे ख़ुदा तआला की क़सम खाता है तो इस का उद्देश्य यह होती है कि अल्लाह तआला मेरी इस घटना पर गवाह है। इसी तरह और ठीक उसी रंग में अल्लाह तआला के कई स्पष्ट कर्म, अत्यन्त छुपे भेदों और कर्मों पर बतौर गवाह हैं इसलिए उसने क़सम के रंग में अपने स्पष्ट कामों को अपने मूल कामों के सबूत में क़ुरआन शरीफ़ कई स्थानों में प्रस्तुत किया और यह कहना सरासर अज्ञानता और मूर्खता है कि अल्लाह तआला ने अल्लाह की ग़ैर की क़सम खाई, क्योंकि अल्लाह तआला वास्तव में अपने कर्मों की क़सम खाता है न किसी दूसरे की। और उसके कर्म उससे हट कर नहीं हैं। जैसे उसका आसमान या सितारा की क़सम खाना इस इरादा से नहीं है कि वह किसी ग़ैर की क़सम है बल्कि इस इच्छा से है कि जो कुछ उसके हाथों की कारीगरी और हिक्मत आसमान और सितारों में मौजूद है इस की गवाही कई अपने छुपे हुए कर्मों के समझाने के लिए प्रस्तुत करे।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 203 से 210 प्रकाशन 2008 कादियान)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,
JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

पृष्ठ 1 का शेष

और स्थान का ख़्याल रखना भी ज़रूरी होता है। अगर एक हलाल काम के करने से नापसंदीदगी के सामान पैदा होते हों तो इस काम से बहरहाल बचा जाएगा। जैसे प्याज़ खाना हलाल है लेकिन मस्जिद में प्याज़ खा कर जाना मना है क्योंकि वहां लोगों को इस की बू से तकलीफ़ होती है। इसी तरह इन्सान के लिए यह हलाल है कि वह हरे रंग का कपड़ा पहने या ऊदे रंग का कपड़ा पहने या लाल रंग का कपड़ा पहने लेकिन अगर किसी का दोस्त कहे कि यह लाल रंग का कपड़ा ख़रीद लो तो वो कहता है मुझे लाल रंग अच्छा नहीं लगता क्योंकि उस के नज़दीक हलाल वह चीज़ है जो उस की पसन्द के अनुसार हो और उसकी तबीयत को अच्छी लगती हो। खाने के बारे में अल्लाह तआला का आदेश है कि हलाल और तय्यब चीज़ें खाओ लेकिन कई लोग बैंगन नहीं खाते कुछ लोग कद्दू को पसन्द नहीं करते। अगर उन से पूछा जाए कि आप बैंगन क्यों नहीं खाते तो वे कहते हैं हमें पसन्द नहीं या दूसरे शख़्स से पूछा जाए कि आप कद्दू क्यों नहीं खाते तो वह कहता है कि मेरी बीवी उस को नापसन्द करती है। इसी तरह जो लोग मकान तैयार करते हैं वह अपने मज़ाक़ और तबीयत के अनुसार मकान बनाते हैं कोई एक मंज़िला मकान बनाता है कोई दो मंज़िला और कोई तीन मंज़िला। कोई मकान में बाग़ीचा लगाना पसन्द करता है और कोई बग़ैर बाग़ीचा को रहने देता है। अब ये सारी चीज़ें हलाल होती हैं लेकिन वे सब पर अनुकरण नहीं करता। जिसका अर्थ यह है कि वह समझता है कि हर हलाल बात पर अनुकरण करना ज़रूरी नहीं लेकिन जब बीवी को तलाक़ देने का मामला पेश आ जाए तो यह कहते हुए कि बीवी को तलाक़ देना जायज़ है फ़ौरन बिना सोचे समझे उसे तलाक़ दे दी जाती है हालाँकि कई हलाल चीज़ें इन्सान अपने नफ़्स के लिए कई अपने दोस्तों के लिए और कुछ सोसाइटी के लिए हमेशा छोड़ता रहता है वास्तव में ऐसे अवसरों पर एक मोमिन की हालत यह होती है कि वह इस हलाल को ख़ुदा तआला के लिए छोड़ देता है और समझता है कि चूँकि यह काम मेरे ख़ुदा को पसन्द नहीं इस लिए में यह काम नहीं करता ताकि मेरा ख़ुदा मुझ पर नाराज़ न हो। अत: नेकी तथा हिदायत यह नहीं कि तलाक़ को आम किया जाए बल्कि नेकी तथा हिदायत यह है कि तलाक़ से बचने की कोशिश की जाए। हलाल के अर्थ यह हैं कि चाहो तो कर सकते हो। यह क़ानून के दृष्टि से मना नहीं लेकिन तुम्हें दूसरों के विचारों दूसरों की भावनाओं दूसरों की सहानुभूति और दूसरों के प्यार को भी सम्मुख रखना चाहिए। जिस हलाल पर अनुकरण करने से दूसरों के विचारों दूसरों की भावनाओं दूसरों की सहानुभूति और दूसरों के प्यार का ख़ून होता हो वह हलाल नहीं बल्कि ऐसा हलाल एक दृष्टि से हलाल है और दूसरी दृष्टि से हराम है। जब लोग अपने दोस्तों की नाराज़गी और क़ौम की नाराज़गी का ध्यान रखते हैं तो क्या ख़ुदा तआला की नाराज़गी ही ऐसी चीज़ है जिससे इन्सान को बे परवाह हो जाना चाहिए। क्या ख़ुदा तआला की हस्ती ही ऐसी कमज़ोर है कि जिसकी नाराज़गी इन्सान के लिए ध्यान न देने योग्य है। जब सांसारिक और दुनयावी इश्क़ रखने वाले लोग अपने महबूब की छोटी से छोटी नाराज़गी से भी डरते हैं और इस को नाराज़ होने का अवसर नहीं देते तो एक मोमिन रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह हदीस पढ़ कर या सुन कर कि اِنَّ اَبْغَضَ الْحَلَالِ عِنْدَاللّٰہِ الطَّلَاقُ किस तरह आसानी से यह साहस कर सकता है कि इसके ख़िलाफ़ करे। जब शरीयत कहती है कि तुम इस सब से अधिक बुरे हलाल को धारण करने से परहेज़ करो तो हर मोमिन का कर्तव्य है कि वह ऐसे मामलों में कमी पैदा करने की कोशिश करे। और इस बात को पति पत्नी के सम्बन्धों की नाराज़गी से समय न भूल जाए।"

(तफ़सीर कबीर, भाग 2 पृष्ठ 519 से 520 प्रकाशन कादियान 2010 ई)

☆ ☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad